अपना राज्य

लेखक
डा० कि० वंग
अनुवादक
गो० न० वैजापुरकर

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, काशी

प्रकाशकीय

श्री ठाकुरदास बंग का यह 'अपना राज्य' मूल मराठी 'ग्रामराज्य' का हिन्दी रूपान्तर है। प्रस्तुत पुस्तक में नौ प्रकरणों द्वारा लेखक ने ग्राम-दान की समग्र विचारधारा का सरल और सुबोध भाषा एवं शैली में प्रतिपादन किया है। ग्राम-दान-क्रांति की पूर्वभूमिका के रूप में भूदान का ऐतिहासिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है। ग्राम-दान और ग्राम-राज्य के स्वरूप पर योजनापूर्ण प्रकाश डालते हुए 'शंका-समाधान' अध्याय में ऐसे अठारह प्रश्नों के मार्मिक उत्तर दिये गये है कि घुमा-फिराकर आज के इस विषय के सभी प्रश्न इन्हीं अठारह प्रश्नों में बैठ जाते और उनके उत्तर इन्हीं उत्तरों में आ जाते हैं। अन्तिम 'सत्तावन की पुकार' श्रीमान्-गरीब, युवक-युवतियाँ, ग्रामीण-नागरिक, सभीमें नवचेतना भरनेवाली भाषा में ग्रथित है। आशा है, यह पुस्तिका ग्राम-दान और ग्राम-राज्य की मूल भूमिका को समझने में समुचित सहायक सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

अनुक्रम

अपना राज्य

अंधकार से प्रकाश की ओर : १ :

हमारा यह देश गाँवों का देश है। भारत को स्वतन्त्र हुए दस वर्ष हो गये है। आज हमारे देश की हालत क्या है ? भारत मे आज भी पर्याप्त अनाज पैदा नही होता। इसीलिए करोडो रुपयो का अनाज बाहर से मँगाना पडता हे। गरीबी दूर नही हुई। सबको काम नही मिला। जहाँ-जहाँ शराबबंदी हुई है, वहा गाव-गाव बे-रोकटोक धडल्ले से शराबखोरी चल रही है। गाव-गाव शराब बनाने का एक नया ही धधा शुरू हो गया, ऐसा लोग कहते है। स्पृश्यो और नव-बौद्धो की भिडत हो रही है। जवान लडके सामाजिक सुधार की बात कान पर ही नहीं आने देते। जहा लडको की ही यह हालत है, वहा लडकियो की क्या बिसात ? मजदूर मन लगाकर खेतो, कारखानो मे या कही भी काम नही करते, यह तो नित्य का ही अनुभव है। कितनी ही सुरक्षितता रखिये या चोर को कोई भी सजा दीजिये, चोरियाँ बद नही हुई। 'साहूकार को हृदय नही होता' इस प्रकार उन्हे गाली देने का कार्यक्रम चारो ओर अबाध रूप से चालू है। लोभ तो किसीका भी छूटा नही। इसलिए हर आदमी दूसरे को

गरीब बनाकर स्वय धनी हो रहा है। स्पर्धा मे तो यह सब चलेगा ही, यही समझकर सब चलते है।

इसी तरह देहाती लोगो का जीवन भी आज कितना चिन्ता-ग्रस्त और पराधीन बन गया है! 'इस वर्ष फसल कैसी क्या होगी', यह चिन्ता तो पुराने जमाने से चली ही आ रही है। अब यह एक नयी चिन्ता लग गयी है कि अनाज और कपास का भाव क्या निकलेगा? कपडा, लोहा, शक्कर, तेल आदि के भाव क्या रहेगे, यह चिन्ता तो है ही। शिक्षण मे कितना, क्या खर्च आयेगा, कौन जाने! पढाई के बाद लडके को बाप का धंधा करने मे शर्म लगती है और शहर मे नौकरी मिलती है या नही, किसे मालूम, साहूकार से किस ब्याज पर कर्ज मिलेगा, तकावी मिलेगी या नही और मिलेगी भी, तो उसका भाव (रिश्वत) क्या है—यह चिन्ता है ही। सरकार और ग्राम-पचायत कौन-कौन से कर लगाकर हमसे कितना पैसा खीचनेवाली है, कौन जानता है! फालतू समय मे किसानो, मजदूरो और कारीगरो को हमेशा काम मिलेगा या नही, इसकी गारटी कौन दे? इस प्रकार व्यापारी, साहूकार और सरकार के बधनो से आज का ग्रामीण पूरी तरह जकड गया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक सारा जीवन अगले दिन की चिन्ता मे बीतता है। मृत्यु के सिवा किसी बात का भरोसा नही। चिन्ता की काली छाया हरएक के चेहरे पर है। क्या है यह जीवन! कब मिटेगी यह चिन्ता? कब दूर होगी यह अनिश्चितता?

एक ओर हिन्दुस्तान का, प्राय सारे देहातो का यह चित्र है और दूसरी ओर?

उत्तर प्रदेश मे मँगरौठ नामक एक गाँव है। यही भारत का पहला ग्रामदान है। यहाँ के किसानो ने अपनी सारी जमीन भूदान मे अर्पित कर दी है। पहले वहा इतना ही अनाज पैदा होता था कि सालभर मे केवल छह महीने मुश्किल से गुजर-बसर हो सके। ज्वार भी सालभर खाने को नसीब न होती थी। ग्रामदान के बाद खेती मे सुधार होने लगा। सबकी शक्ति और बुद्धि गाँव की पैदावार बढाने मे लग गयी। हर आदमी ने केवल अपने तई सोचना छोड दिया—हर आदमी गाँव का हित देखने लगा। परिणाम यह हुआ कि अब इतनी पैदावार होने लगी कि सालभर चलने पर भी बच जाय। घर-घर गेहूँ की रोटी बनने लगी है। ग्रामदान का अगर इन लोगो ने यह अर्थ लगाया हो कि 'फाका करने की जगह अब घर-घर गेहूँ की रोटी है', तो इसमे आश्चर्य की कौन-सी बात है ? यही हाल उडीसा के 'गगडा' नामक गाँव का है। इस गाँव ने दो वर्ष पूर्व ग्रामदान का कदम उठाया। वहाँ के लोगो ने श्रम-दान से तालाब खोदा और जापानी पद्धति की धान-खेती की। एक वर्ष मे ही वहाँ की पैदावार तिगुनी बढ गयी है। बिहार के 'सेन्हा' गाँव मे खाने-भर का अनाज भी पैदा न होता था। लेकिन आज हालत यह है कि सबकी आवश्यकताएँ पूरी होकर अन्न बाहर जा रहा है।

अकेली गाँव की बात लीजिये। उडीसा मे गजाम जिले के इस छोटे-से गाँव ने ग्रामदान करने पर कहा 'हम सब काली-माँ (धरती माता) के पुत्र हैं। इसलिए हम सब भाई-भाई हो गये, तब आपस मे छुआछूत कैसे चलेगी ? हम शराब न पीयेंगे।'

शराब के घडे उन्होने फोड डाले। यही बात विदर्भ के 'वाई' गाँव की है। वाई विदर्भ का पहला ग्रामदान है। अमरावती जिले की 'मोर्शी' तहसील मे यह पडता है। इस वर्ष ३० जनवरी को यहाँ ग्रामदान हुआ। वहाँ दस-बारह हजार रुपयो की शराब हर साल तैयार होती और लोग उसे पीते थे। अब वहाँ शराब बनाना और पीना, दोनो बद हो गये है।

स्पृश्यो और अस्पृश्यो के सबध देखने के लिए हम फिर अकेली का ही उदाहरण लें। अकेली के अस्पृश्य लोगो को कुछ स्वार्थी लोगो ने उसका दिया। इस कारण उन अस्पृश्यो ने ग्रामदान के बाद वितरण मे प्राप्त जमीने लौटा दी। उस समय गाँव के स्पृश्य उनके पास पहुँचे और उनसे कहा कि 'तुम्हारा धर्म तुम्हारे साथ और हमारा धर्म हमारे साथ। अगर आप जमीन न ले, तब भी उसे हम आपकी ही मानेगे। आपकी ओर से उसकी मशक्कत हम मुफ्त मे ही करेगे। जो पैदावार होगी, उसे हम आपके घर पहुँचा देगे।' वज्र का हृदय भी ऐसे वर्ताव से पिघल सकता है, तब अकेली के अस्पृश्य तो आदमी ही थे। इस उत्तर से वे शर्मिदा हो गये। उनमे का कलि भाग गया। उन्होने जमीन पर मेहनत करना तय किया। पहले गाँव 'अकेली' याने 'एकाकी' था। अब वह एकाकी नही रहा। ग्रामदान हो गया, इसलिए 'अ-कलि' बन गया। कलि भाग गया। इस प्रकार अकेली मे जब छुआछूत और शराब बद हो गयी, तब भगवान् ने उसे कसौटी पर कसा। भगवान् कभी-कभी भक्तो की कसौटी करता रहता है। जो कसौटी करना है, वही भक्तो को

कसौटी से पार उतरने का बल भी देता है। गाँव के चार लडके विवाह-योग्य हो गये। दूसरे गाँवो के लोगो ने तय किया कि जिन लोगो ने छुआछूत, शराब और जमीन की मालकियत छोड दी, उन्हे हम अपनी कन्याएँ न देगे। बस, अकेली पर सामाजिक वहिष्कार शुरू हो गया! फिर एक चमत्कार हुआ। नजदीक के गाँव की चार सयानी लडकियाँ एक दिन अकेली मे आ पहुँची। उन्होने कहा कि 'जो शराब नही पीते और जिन्होने सारी जमीन गाँव की कर दी, उन्ही युवको से हम विवाह करेगी।' विवाह हो गये। उस दिन 'अकेली' के आनन्द का क्या पूछना!

बाई के लोगो ने सामूहिक खेती करना तय किया। कल तक मन लगाकर काम न करनेवाले मजदूर थे वे! उनमे एक रात मे फर्क आ गया। सबकी मालकियत होते ही उनके मन अभिमनित हो गये। आज बाई के सारे लोग सबेरे चार बजे घटी बजने के साथ उठ जाते है। पाँच बजते ही खेतो मे काम पर हाजिर रहते है। रात को आठ बजे प्रार्थना होती है, उसमे सब लोग हाजिर रहते है। प्रार्थना के बाद दूसरे दिन के काम की योजना बनाते है। वहाँ के लोगो ने इसी वर्ष दो सौ एकड पडती जमीन को जोता है। पहले की चार सौ एकड जमीन मे तो मशक्कत होती ही है।

उडीसा के बालेश्वर जिले मे 'पाखरा' नामक एक गाँव है। वह भी ग्रामदानी हो गया है। अब तक जमीन का वितरण नही हुआ था। वहाँ लोगो ने एक पेशेवर चोर को पकडा। उसे ग्राम-पंचायत के सम्मुख हाजिर किया गया। चोर ने अपराध

स्वीकार कर लिया। और आप जानते है, पंचायत ने चोर को क्या सजा दी ?—'इसे तीन एकड़ जमीन देकर किसान बनाया जाय !'

उड़ीसा में अधिक-से-अधिक ग्रामदानी गाँव कोरापुट जिले मे मिले है। उन गाँवों में गाँव के लोगों द्वारा 'को-ऑपरेटिव' (सहकारी) दूकानें खोली गयी है। इन दूकानों मे न तो ठीक-से कमरे है और न दरवाजे; फिर कहाँ के ताले ! हर तीन महीने पर हिसाब और जाँच करने पर भी कोई माल चोरी गया हो, ऐसा दिखाई नही दिया। ऐसी बाते सुनने पर प्रतीत होने लगता है कि मानो ग्रामदान कलियुग मे सत्ययुग ला रहा है।

ग्रामदानी गाँवों मे लोगों पर के पुराने कर्ज का भार साहूकारों को समझाकर कम किया जा रहा है। कुछ साहूकारों ने तो अपने कर्ज की रकमें छोड भी दी है। उड़ीसा के मानपुर के ग्रामदानी गाँव में एक साहूकार ने कर्ज माफ कर, रेहन रखी हुई जमीन भी वापस कर दी। सर्वापुर नामक एक दूसरे गाँव के साहूकार ने १२७६) का कर्ज छोड़ दिया और दस्तावेज फाड डाला !

एक ओर साहूकार कर्ज छोड़ रहे है, तो दूसरी ओर भूमि के पुनर्वितरण से अनेक नवीन दृश्य दिखाई दे रहे है। ऐसे पुनर्वितरण में कल तक जो पचास एकड का मालिक था, उसे वितरण के बाद दस एकड़ जमीन मिली है। इसी तरह जिसके पास कल तक इंचभर भी जमीन न थी, उसे बारह एकड़ जमीन (बड़ा कुटुम्ब होने के कारण) मिली है। दोनों ने ही प्रसन्नता-पूर्वक जगन्नाथ के प्रसाद को स्वीकार किया है। दूसरी ओर

गरीबो को ज्यादा जमीन मिलने की सभावना होने पर भी गरीबो ने प्रमाण की अपेक्षा कम जमीन ली और अपने गाँव के श्रीमान् को ज्यादा जमीन देकर उस पर प्रेम की वर्षा की !

उडीसा मे ग्रामदान से पूर्व हजारो लोगो के पास पहनने को एक ही वस्त्र था। वे रात को उसे धोते और दिन मे पहनते ! अब कताई कर ऐसे लोग अधिक कपडो का उपयोग करने लगे है। घर-घर चरखे की गुञ्जार चल पडी है। नयी तालीम की पाठशालाएँ शुरू हो रही है। 'यज' नामक सूजाक जैसा भयानक रोग काबू मे आ रहा है। अनेक गाँवो मे से उसका पूर्ण उच्चाटन हो गया है। मँगरौठ का नष्टप्राय चर्मोद्योग अब विकसित होने लगा है। चर-सडास शुरू हो गये है। अब मँगरौठ गाँव मे भगी नही रहा है। गाँव स्वच्छ हो गया है। बढई, कुम्हार आदि गाव मे सिखाकर तैयार किये गये है।

देशभर चारो ओर निराशा और बेजवाबदारी का मरुस्थल होने पर भी ये छोटी-छोटी हरियालियाँ कहा से आयी ? घोर कलियुग मे सत्ययुग की याद दिलानेवाले ये दृश्य कैसे दिखाई पड रहे है ? यह ग्रामदान का परिणाम है। यह एक सत की छह वर्ष तक सतत की गयी तपश्चर्या का परिपाक है। भूदान-यज्ञरूपी बेल का 'ग्रामदान' फल है। ग्रामदान एक क्रान्ति है, यह कोई सर्वसाधारण सुधार नही। इसलिए ग्रामदान की क्राति की ओर मुडने से पहले हम सुधार और क्राति को समझ ले।

● ● ●

क्रान्ति और सुधार

: २ :

भूदान, ग्रामदान और ग्रामराज्य—यह क्रांति का कार्यक्रम है, सुधार का नही। इसलिए 'क्रांति' याने क्या और 'सुधार' अथवा विकास याने क्या, इसे हमें समझ लेना चाहिए।

सुधार, विकास अथवा उत्क्रांति—इन सबका एक ही अर्थ है। सुधार धीरे-धीरे होता है और क्रान्ति फौरन। क्रान्ति को गति और तीव्रता की अपेक्षा है। भूदान-यज्ञ क्रान्ति है, क्योंकि इस आन्दोलन द्वारा जल्दी-से-जल्दी, सत्तावन में समता लानी है। पाँच-पचास वर्षों में यह कार्यक्रम पूरा नही करना है।

लेकिन जल्दी होनेवाली कोई भी बात क्राति नही होती। हम बैलगाड़ी की अपेक्षा विमान से बहुत जल्दी जाते है, इसलिए विमान से जाना कोई क्रान्ति नही। क्रान्ति मे लोगों की समझ, धारणा, कल्पना या मूल्य बदलते हैं। पहले और आज भी हम मानकर चलते है कि मालिक-मजदूर-संबध रहेगे ही। मालिक और मजदूर ठीक-ठीक बर्ताव करे और इतना हो जाय, तो आज बहुत-से लोग खुश हो जायँगे। यह है मालिक-मजदूर-संबंध मे सुधार! किन्तु क्रान्तिकारी विचार करता है कि एक दूसरे को मजदूर क्यों रखे, स्वयं मालिक क्यो न बने? अर्थात् वह पुराने मालिक-मजदूर-संबंध की जड़ पर ही प्रहार करता है। मालिक-मजदूर-संबंध को सुधारना सुधार है, किन्तु मालिक-मजदूर-संबध को नष्ट कर देना क्रान्ति होगी।

हम एक दूसरा उदाहरण ले। आज जगह-जगह मेहतर हडताल करते है। वेतन-वृद्धि, छुट्टियाँ, अच्छे औजार आदि उनकी माँगे है। यह सब सुधार का कार्यक्रम है। किन्तु क्रान्ति का कार्यक्रम यह है कि हर आदमी अपनी-अपनी सफाई का काम करे और समाज मे कोई भी मेहतर या भगी न रहे। 'मेहतर ही न रहे' कहनेवाला मूल कल्पना को ही खतम करता हे। उसके स्थान पर नयी कल्पना दाखिल करता हे। सबको सफाई करनी चाहिए, सबको भू-माता की सेवा करनी चाहिए—इससे जीवन के मूल्य ही बदल जाते है।

मूल्य-परिवर्तन के लिए लोगो के मन बदलने पडते है। क्योकि उनके मन मे घर की हुई, पुरानी सडी रूढियाँ, कल्पनाएँ, समभ आदि को दूर कर युगानुकूल नवीन मान्यताओ की स्थापना करनी होती है। सुधार के कारण भी आदमी के मन मे फर्क पडता है, पर वह उतना मूलगामी नही होता। इसलिए कोई भी क्राति पहले मनुष्य के मन मे होती हे। वाद मे उसका प्रतिविम्व बाहरी समाज-रचना पर अकित हुआ करता है।

मूल्य वदलने से समाज की पुरानी रचना वदलती और नयी निर्माण होती है। समाज ज्यो-का-त्यो रह जाय, थोडा-सा अन्तर पडे—जख्म पर जरा मलहम-पट्टी हो जाय, तो वह विकास का कार्यक्रम हुआ। उदाहरण के लिए आज की पचवर्षीय योजना ही ले लीजिये। इस योजना मे कहा गया हे कि खेती के मजदूरो की कम-से-कम कितनी मजदूरी रहे, यह तय होना चाहिए। मजदूरी को इससे थोडा सुख मिलेगा। कुछ वेतन-

वृद्धि होगी। लेकिन इससे मजदूर मजदूर ही रहेगा और मालिक मालिक ही। किन्तु भूदान-यज्ञ मे से जमीन की मालकियत खतम हो जाने से कोई भी किसी पर मालकियत न लाद सकेगा। यही क्रांति है।

एक वार समाज-रचना में क्रांति हुई कि फिर कानून, राजनीति, तत्वज्ञान, धर्म आदि पर भी क्रांति का उचित परिणाम और सबमें उचित परिवर्तन होता है। जमीन की मालकियत मिट जाने पर फिर संपत्ति का भी कौन मालिक रह जायगा ? धर्म की दास्य-भक्ति के बदले सख्य-भक्ति अधिक उपयुक्त प्रतीत होने लगेगी। मालकियत के हक के आधार पर बने हुए सारे कानून बदल जायँगे। इस तरह क्रांति शुरू होती है जीवन के एक विभाग से, पर व्याप्त हो जाती है सम्पूर्ण जीवन मे। सुधार मे ऐसा नही होता। सुधार उसी विपय तक सीमित रहता है। उसका परिणाम वही समाप्त हो जाता है।

क्रांति होने पर सुधार तेजी से होते है। जब तक क्रांति नही हो जाती, तब तक सुधार भी कोई बहुत आगे नही जा सकता। जब तक समाज में जमीन और संपत्ति के वितरण की क्रांति नही हो जाती, तब तक स्कूल, सडके, अस्पताल, कृषि-सुधार आदि विकास के कार्यक्रम बहुत आगे नही जाते। हर बात के लिए पैसा नही, लोगों का मानस तैयार नही, कोई जवाबदारी से काम नही करता—ये ही कारण सामने आयेंगे, जिनसे सारी प्रगति रुक जायगी। लेकिन जहां एक बार लोगों के मन बदल जायें और आर्थिक क्रांति हो जाय, तो फिर कृषि-सुधार, स्कूल, अस्पताल

आदि विकास-कार्य अपने-आप होगे। कारण सब लोग मन लगाकर काम करेगे। उन्हे यह सारा काम सरकार का या दूसरो का न लगकर अपना ही लगेगा। इसीलिए क्रांति होने पर सुधार की गति कई गुना हो जाती है। फिर कुछ समय बाद समाज-रचना पुरानी पड जाती है, जिससे सुधार की गति मद पड जाती है। इसलिए उस रचना को भी बदलना पडता है, यानी क्रांति करनी पडती है। पुन सुधार भी पूरे वेग से होने लगते है।

क्रांति का मतलब है, जनता के विचारो मे आमूल परिवर्तन। यह शुद्ध साधनो से ही हो सकता है। जबर्दस्ती से तो बाह्य-रचना बदलती है, पर विचार लादे नही जा सकते। कितनो को यह भ्रम हो गया है कि क्रांति जबर्दस्ती से हो सकती है। यही कारण है कि ऐसी जबर्दस्तियो के खिलाफ आन्दोलन या तूफान खडे होते है। इसे 'प्रतिक्रांति' कहते है। क्रांति का अर्थ आमूल परिवर्तन है। फिर अगर पुराने जमाने मे क्रांति करनेवालो ने गलती से जबर्दस्ती के साधनो का उपयोग किया हो, तो क्या हमे उनमे परिवर्तन न करना चाहिए? सुधारो मे भी शुद्ध ही साधन रहते है।

आज हमारे देश मे क्या चल रहा है? पचवर्षीय योजना चालू है। कुछ विधायक कार्यकर्ता स्वतन्त्र रूप से और सस्थाओ द्वारा भी खादी, नयी तालीम, ग्राम-सेवा आदि सेवा-कार्य कर रहे हैं। सरकार की ओर से सडके, नहरे, बाँध, बिजली-उत्पादन, कारखाने, तकावी, स्कूल, अस्पताल आदि सुधार और विकास के

अनेक कार्य शुरू है। किसान-सभाएँ और मजदूरों के 'यूनियन' वेतन-वृद्धि, छुट्टियाँ आदि माँगकर मजदूरों का जीवन सुखी करने का यत्न कर रहे हैं। लेकिन इन सब सुधारों से वर्तमान पूँजीवादी समाज-रचना बदल नही सकती। धनवान् धनवान् ही रहेगा। गरीबों की गरीबी किंचित् दूर होगी। कदाचित् उतना भी न होगा, क्योंकि क्रांति के पूर्व सुधारो से कभी-कभी मूल रोग और अधिक बढ जाता है। आज के समाज मे तकाबी दी जाय या सुधार लागू किये जायँ, तो भी उनका लाभ ऊपर के वर्गों को ही मिलता है। पैसे के पास ही पैसा जाता है। जिनके पास कुछ नही है, उन्हे इन सुधारों से कोई लाभ नही मिलता। जिसके पास खेत नही, उसे आर्थिक मदद भी नही मिलती। गरीब आदमी स्कूल का लाभ कैसे उठा सकता है? उसे तो अपने बच्चे को पशुओं के पीछे ही भेजना पड़ता है और लडकी के जिम्मे घर मे छोटे-छोटे बच्चों को सँभालने का काम आता है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना मे पाँच हजार आबादी के नीचे-वाले गाँवो पर जो रकम खर्च होनेवाली है, उससे पाँचगुनी रकम पाँच हजार जनसंख्या से ऊपरवाले कसबों और शहरों पर खर्च होनेवाली है। कांग्रेस के मंत्री श्री श्रीमन्नारायणजी कहते हैं: 'सामुदायिक विकास-योजनाएँ और विस्तार-योजनाएँ निम्नवर्ग की आर्थिक स्थिति सुधारने मे सफल नही हुई।' इसलिए यह अन्त्योदय का अर्थात् सबसे नीचे के लोगों के उदय का कार्यक्रम नही है। और फिर इस योजना की गति भी बहुत ही मंद है। पाँच वर्षों मे देश का उत्पादन पचीस प्रतिशत बढ़ने-

वाला है। उसमे से आधा तो वढती हुई जन-सख्या के कारण साफ ही हो जायगा। अर्थात् वारह प्रतिशत ही उत्पादन वढेगा। इसमे से गरीवो के पल्ले कितना पडेगा, कौन जाने ! इस वारे मे, जैसा कि श्रीमन्नारायणजी कहते है, इन नौ-दस वर्षो मे धनी और गरीव के जीवन-मान मे अन्तर कम न होते हुए उल्टा वढता ही जा रहा है। इसलिए गरीवो की गरीवी मिटे बिना वे इन सुधारो का वहुत-कुछ लाभ न उठा सकेंगे। इन छोटे-मोटे सुधारो से एक दु ख मिटेगा, तो दूसरा पैदा हो जायगा। अत दु ख-निवारण का काम क्राति का काम नही है। अगर हम इस काम मे पडे, तो खुद मिट जायँगे, पर दु.ख न मिटेंगे। इसलिए हमे दु खो की जड ही काटनी चाहिए। वर्तमान दु खो की जड सदोष आर्थिक रचना है। इसीलिए हम खेती और धन वाँटेंगे और नवीन अर्थ-रचना खडी करेंगे। इतनेभर से ही गरीव किसानो का उत्पादन एकदम दुगुना हो जायगा। भूमि-मजदूरो का उत्पादन तो इससे भी अधिक वढेगा। खेती मिल जाने के कारण उनके काम का हौसला ही बढ जायगा और इसीलिए पाच वर्षो मे देश का उत्पादन डेढ-दो गुना हो जायगा। ग्रामदानी गाँवो का उत्पादन एक वर्ष मे दो-तीन गुना हो गया, यह तो हम देख ही चुके हैं। उनका उत्पादन बढा कि फिर वे स्कूल, दवाखाने, तकावी आदि सुधारो से भी लाभ उठा सकेंगे। गाँव स्वय ही स्कूल और अस्पताल चला सकेंगे।

जो स्थिति पचवर्षीय योजना की है, वही सेवा के अन्य कामो की भी है। ये सारे काम जी-तोड मेहनत से अनेक सेवक कर रहे

है। इससे गरीबो को थोडी-बहुत मदद और आधार भी मिल जाता है, फिर भी गरीबी हमेशा के लिए नही मिटती। पूंजीवादी रचना नही बदलती। तीस-पैंतीस वर्षों से खादी-काम चल रहा है। दस-पन्द्रह वर्षो से नयी तालीम का कार्य चल रहा है। पचास-साठ वर्षों से मजदूर-सघटन कायम है, फिर भी इन सबसे समाज-रचना मे रत्तीभर अन्तर नही आया। इसलिए पचवर्षीय योजना, विधायक कार्यो और मजदूर-सघटन मे जनता का मन नही लगता।

नेहरूजी कहते हैं कि 'पचवर्षीय योजना से अन्न का उत्पादन ठीक-ठीक बढाया नही जा सका और न किसानो मे उत्साह ही निर्माण किया जा सका।' वैसे ही विनोबाजी कहते हैं कि मैंने तीस वर्ष विधायक कार्यो मे बिताये, फिर भी वे विधायक कार्य बहुत ज्यादा आगे न बढ सके। क्योकि उन्हे भूमि का—भू-वितरण का—आधार नही था। भला नीव के बिना मकान कैसे खडा हो सकता है? उडीसा के कुछ हिस्से मे किसान धान का बीज बोने के पहले खेती को जला डालते हैं, बाद मे नयी बोवाई करते है। इससे फसल अच्छी होती है। इसी प्रकार पुरानी समाज-रचना बदले बिना नवीन काम कैसे होगा? आज समाज अर्थ-सग्रह की नीव पर खड़ा है, उसे बदलकर हमे असग्रह और श्रम-निष्ठा के नवीन नैतिक मूल्यो पर उसे खड़ा करना है। व्यभिचार के खिलाफ कानून रहे या न रहे, व्यभिचार आज अवैध माना ही जाता है। वैसे ही सग्रह भी अवैध माना जाना चाहिए।

ग्रामदान पुरानी समाज-रचना को बदलकर नवीन समाज-रचना करने का काम है। ग्रामदान के रूप में मानवीय मन बदलने की कुञ्जी मिल गयी है। ग्रामदान से आज के सारे प्रश्न हल हो जायँगे। मानव-मन को लोभ, बेजवाबदारी और बेदरकारी के लगे ताले खुल जायँगे। यह क्रांति सत्ताईस सौ गाँवों में एकदम कैसे हो गयी ? भूदान के बीज से ग्रामदान का वृक्ष कैसे निर्माण हुआ ? यह जानने के लिए हमें थोड़ा पीछे मुड़कर देखना चाहिए।

० ० ०

पिछले छह वर्ष

भारत मे समता और समृद्धि लाने और देश का सारा कल्मप धो डालने के लिए सन्त विनोवाजी ने सन् १९५१ मे भूदान-यज्ञ शुरू किया। भूदान-यज्ञ का कार्य करने के लिए सब प्रान्तो मे उन्होने भूदान-समितियाँ स्थापित की। इन पाँच वर्षो मे देश के हजारो कार्यकर्ताओ को यज्ञ का प्रशिक्षण मिला। लाखो गाँवो मे सन्देश पहुँचा। कोटि-कोटि जनता को भूदान-यज्ञ के मोटे-मोटे तत्त्व मालूम हो गये। बयालीस लाख एकड जमीन प्राप्त हुई। वाईस हजार से अधिक गाँव ग्रामदान मे मिले। सम्पत्ति-दान, बुद्धि-दान, श्रम-दान और जीवन-दान शुरू हुए। हजारो लोगो ने पूरा समय देकर काम किया। भूदान-आन्दोलन चलाने के लिए तथा जरूरतमन्द कार्यकर्ताओ के निर्वाहार्थ 'गाधी-स्मारक-निधि' से भी कुछ मदद मिली। शेप मदद जनता ने की। सैकडो कार्यकर्ताओ ने अवैतनिक कार्य किया। कन्याकुमारी से हिमालय तक और द्वारिका से डिब्रूगढ तक भूदान-यज्ञ की घोषणा से भारतीय आकाश गूँज उठा। किन्तु विनोवाजी का ध्येय हिमालय जितना उच्च और सागर जितना ही गभीर है। इसलिए उन्होने इस वर्ष कन्याकुमारी मे हिन्द महासागर के सामने प्रतिज्ञा की कि 'ग्रामराज्य मेरा लक्ष्य है और उसके सिद्ध होने तक मैं इसी तरह यात्रा करता रहूँगा। ग्रामराज्य के इस ध्येय के लिए सत्तावन मे गाँव-गाँव का ग्रामदान होना चाहिए।'

लोग पूछते है कि इतनी ऊँची उडान एक वर्ष मे ही कैसे भरी जा सकेगी ? छह वर्ष मे दो-ढाई हजार ग्रामदान और सत्तावन मे, एक वर्ष मे साढे पाँच लाख ग्रामदान ! लोग पूछते है कि यह कौन-सा गणित है ?

यह क्रांति का गणित है। मृग नक्षत्र मे हम बिनौला बोते है। दशहरे के आसपास कपास के पौधे मे शुरू मे एक यहाँ, तो एक वहाँ, इस तरह आठ-दस कपास की ढेंढी (बोंड) दिखाई पडती है। बाद मे पन्द्रह दिनो मे चारो ओर से वे सफेद हो जाती है। जो काम तीन-साढे तीन महीने मे किंचित् भी दिखाई नही दिया, वह तीन महीने बाद थोडा-सा दीखने लगा और फिर दस-पन्द्रह दिन बीतते-न-बीतते वही सर्वत्र प्रकट हो जाता है। इसी तरह अब तक भूमि-क्रांति की तैयारी हुई है। सबको आत्म-विश्वास हो गया है। इसलिए सब लोग जोर लगाये, तो सत्तावन मे यह क्रांति सफल होकर आर्थिक रचना को बदल सकती है, यह किसीकी भी बुद्धि को जँच सकने जैसी बात है।

वर्तमान आर्थिक रचना कैसी है ? उसका आधार स्पर्धा या खीचतान है। 'जिसकी लाठी, उसकी भैस' का न्याय आज आर्थिक क्षेत्र पर लागू होता है। समाज मे धनी, मध्यम वर्ग और गरीब—ऐसे वर्ग बन जाते है। मालिक और मजदूर, ये गुट बन जाते है। आपस मे सघर्ष होता है। समझ लीजिये, राम के पास दस सेर शक्ति है और गोविन्द के पास आठ सेर ! दोनो मे सघर्ष होने पर राम जीतेगा, लेकिन सारा समाज हार जायगा। क्योकि सघर्ष के कारण सोलह सेर शक्ति लडने मे खर्च हुई और

दो सेर समाज को मिली। इसके विपरीत राम और गोविन्द मे सहयोग हो जाय, तो समाज को अठारह सेर शक्ति मिलेगी। सघर्ष से द्वेष, मत्सर और कलह बढता है। वह अन्त मे विश्व-युद्ध तक पहुँचता है। सब जानते है कि इसमे किसीका भला नही है। फिर भी समाज-रचना के इस भँवर मे पड जाने से किसीको भी इससे बाहर निकलने का उपाय सूझ नही रहा है। इसलिए हमे खीचतान या स्पर्धा की जरूरत नही। हमे सहयोग के आधार पर ही समाज बनाना है।

अतएव आज के समाज की रचना बदलनी चाहिए। आज समाज मे रोग फैलता है, तो उससे डॉक्टर को लाभ होता है। झगडे बढने पर वकील की बन आती है। अतिवृष्टि से घास-फूस बढ जाय, तो मजदूरो को फायदा और मालिक को नुकसान! याने आज यह चलता है कि एक का फायदा होता है, तो दूसरे का नुकसान! किन्तु वास्तविकता यह है कि एक मनुष्य के हित के विरुद्ध दूसरे का हित हो ही नही सकता। आज की गलत समाज-रचना के कारण हितो मे विरोध का भास निर्माण हो गया है। इसलिए हमे ऐसा समाज स्थापित करना चाहिए, जिसमे एक के स्वार्थ की दूसरे के स्वार्थ से टक्कर न हो और सबका उदय हो। ऐसे ही समाज को 'सर्वोदय-समाज' कहा जाता है। यह कौन नहीं जानता कि केवल जमीन के वितरणमात्र से सारे प्रश्न हल नही हो जाते। आर्थिक समता की नीव के बिना सर्वोदय-समाज की इमारत खडी न हो सकेगी। इसके लिए सबमे कर्तव्य-भावना जगानी होगी। अपने से अधिक दुखी लोगो के

लिए हरएक को कुछ करना चाहिए, यह भावना समाज में निर्माण करनी होगी। हमारे देश में सबसे नीचे का आदमी है, कृषि-मजदूर! किसान उसे जमीन दे और दूसरे लोग संपत्ति-दान द्वारा बैल, औजार, बीज आदि दें। यह कार्यक्रम भूदान-यज्ञ द्वारा देश के सामने आया। प्रत्यक्ष त्याग और आचरण का कार्यक्रम देश को भूदान-यज्ञ के कारण मिला। देश के लाखों लोग उस मार्ग पर एक-एक कदम बढ़े हैं। जो उस मार्ग पर न चल सके, उन्हे भी वह अच्छा लगा।

एक बार जन-मानस में कार्यक्रम के प्रवेश होने पर अब सर्वोदय-समाज की स्थापना के लिए जल्दी-जल्दी आगे के कदम उठाना संभव होगा। हमारे देश में देहात बहुत है। इसलिए हमारे देश की रचना ग्राम-प्रधान होनी चाहिए। स्वराज्य की पार्सल लन्दन से दिल्ली पहुँच गयी, पर अब वह वहीं अटक गयी। अब उसे गाँव-गाँव पहुँचाना चाहिए। स्वराज्य का रूपान्तर ग्रामराज्य में होना चाहिए। ग्रामराज्य तभी स्थापित होगा, जब सबको तीव्रता से उसकी आवश्यकता महसूस होगी। इसलिए अगले प्रकरण में हम ग्रामराज्य की आवश्यकता पर विचार करेंगे।

● ●●

ग्रामराज्य की आवश्यकता : ४ :

अपने पैरों पर खड़े हुए बिना देहात सुखी न बन सकेंगे। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है कि 'पराधीन आदमी को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता' : *'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।'* उसी सुख के लिए हमने भारत का स्वराज्य प्राप्त किया है।

जो न्याय भारत पर लागू होता है, वही भारत के ग्रामों पर भी लागू होता है। स्वराज्य-प्राप्ति को दस वर्ष हो गये, लेकिन अभी तक ग्रामों की गुलामी नहीं मिटी। हर बात के लिए देहात शहरों पर अवलंबित है, गुलाम है। इसीलिए गाँवों को चारों तरफ से लूटा जा रहा है। इसी कारण गाँवों में लक्ष्मी नहीं रही। ग्रामीण शहरों में बना माल खरीदते है, इसलिए ग्रामोद्योग नहीं रहे। देहातों में बेकारी और अर्ध-बेकारी प्रचण्ड रूप में है। एक साधारण देहात का हिसाब लगाकर देखा गया। उससे दिखाई दिया कि देहाती जितना कमाते हैं, उससे ज्यादा लूट-खसोट, अज्ञान और व्यसनों में गँवा देते हैं। हिन्दुस्तान के हर कुटुम्ब की औसत वार्षिक आमदनी लगभग पन्द्रह सौ रुपये है। इसमें से ग्रामीण किसान के हिस्से में सात सौ और मजदूर के हिस्से में पाँच सौ रुपये आते हैं। केवल न्याय्य-वितरण से भी प्रत्येक ग्रामीण की आमदनी दो-तीन गुनी हो सकती है।

हमारे देहातों में किसान बहुसंख्यक हैं। लेकिन वे भी क्या एक ही वर्ग के हैं? देहात के किसानों के चार वर्ग बन जाते हैं।

पहला है, बडे किसानो का वर्ग। इनके पास दो-चार सौ एकड से अधिक खेती होती है। खेती के लिए ट्रैक्टर रहता है, इसलिए इन्हे हम 'ट्रैक्टरवाले' कहेगे। गाव मे इनका पक्का बँगला रहता है। शहर मे भी बँगला होता है। ये आजकल प्राय शहर मे ही रहते है। घर मे टेबुल-कुर्सियाँ होती है। अपने लडके-बच्चो को शिक्षण के लिए दूर-दूर तक भेजते हैं। ये हाथ से काम नही करते। साहूकारी भी चलती है। सरकारी अधिकारी, असेम्बली के सदस्य, मत्री आदि इन्हीके यहाँ ठहरते है। इस कारण गाँव के लोगो पर इनकी धाक होती है। पचवर्षीय योजना का काफी बडा हिस्सा इन्हीके पल्ले पडता है। इनकी सख्या दो फी सदी होगी।

दूसरा वर्ग उन लोगो का है, जो पचीस एकड से सौ एकड तक के मालिक है। घर पर साइकिल होती है, इसलिए इन्हे हम 'साइकिलवाले' कहेगे। पक्का घर है और घर मे कुर्सिया है। ये अपने बाल-बच्चो को शिक्षण के लिए नजदीक के कॉलेज मे भेजते है। देहात मे इनकी एकआध दूकान होती है, साहूकारी भी करते है। छोटे-मोटे यत्र लाकर ये गाव मे बेकारी बढाते है। ये भी अपने हाथ से खेती मे काम नही करते। खा पीकर सुखी होते हैं। इनकी सख्या सौ मे आठ-दस होती है।

तीसरा वर्ग पाँच एकड से पचीस एकडवालो का है। इनके पास बैलगाडी और बैल-जोडी होती है, इसलिए इन्हे हम 'बैलवाले' कहेगे। घर कच्चा और छोटा। चारपाई के सिवा कोई 'फर्नीचर' नही। ये अपने एकआध लडके को सातवी तक

पढा सकते है । फिर वह शिक्षक या पटवारी बनने के लिए दर-दर की खाक छानता फिरता है। काम के समय ये मजदूरो से मदद लेते है। खाली समय दूसरो के यहाँ भी मजदूरी के लिए जाते है। हमेशा कर्ज मे आकठ डूबे रहते है। इनका जीवन आसुओ की करुण कहानी होता है। इनकी सख्या पचास फी सदी होती है।

चौथा और सबसे नीचे का वर्ग उन लोगो का हे, जिन्के पास एक तो जमीन होती ही नही, और हो भी तो पाँच एकड से ज्यादा नही। इनके यहाँ एकआध बकरी होती है, इसलिए इन्ह 'बकरीवाले' कहना चाहिए । कभी-कभी इनके पास घर के लिए भी जमीन नही होती। घर यानी एक 'चद्रमौली' (बिना ढँकी, खुली) झोपडी ! बर्तन-भाडे भी पूरे नही होते, फिर फर्नीचर कहाँ ? न पेटभर भोजन और न बाल-बच्चो की पढाई ! इसकी भी गारटी नही कि कल काम मिलेगा ही। इसलिए यह वर्ग सदैव चिता और कर्ज मे डूबा रहता है। इनका जीवन हमारे देश का सबसे बडा कलक है। इनकी सख्या चालीस फी सदी होगी।

ऊपर के चार वर्ग ज्वारी और कपास के क्षेत्र को ध्यान म रखकर किये गये है। धान के क्षेत्र मे पहला वर्ग तीस एकड के ऊपर का और दूसरा वर्ग दस से तीस एकड तक का है। तीसरा वर्ग तीन से पन्द्रह एकड तक का और चौथा वर्ग तीन से कम एकड का रहेगा। धान के क्षेत्र मे तीसरे वर्ग की सख्या सौ मे से पैसठ-सत्तर तक और चौथे वर्ग की पन्द्रह बीस फी सदी तक पहुँचेगी।

सब वर्गो के किसान बाजार के लिए माल पैदा करते है

ग्रौर इसी कारण व्यापारियों की शरण जाते है। ऊपर का हर वर्ग अपने से नीचे के वर्ग को लूटने की कोशिश करता है। सबका भार भूमिहीन मजदूरों पर पड़ता है। सब किसानों की शिकायत है कि मजदूर मन लगाकर काम नही करते। मजदूरों की शिकायत है कि पहले जैसे मालिक नही रहे। छोटा किसान ग्रौर भूमिहीन मजदूर राष्ट्र का आधार है, नीव है। लेकिन यह नीव, आधार ही कमजोर है।

आज गाँव की धन-दौलत पाँच मार्गो से शहरों की तरफ जा रही है। पानी लानेवाली मोट मे अगर बड़े-बड़े पाँच छेद हों, तो उसका भरकर ऊपर आना असंभव होता है। छिद्रों में से होकर सारा पानी निकल जाता है। इसी तरह गाँव की लक्ष्मी आज शहरो की तरफ निकल जा रही है। ये पाँच छेद है—
१. बाजार, २. साहूकार, ३. सरकार, ४. व्यसन ग्रौर ५ रीति-रिवाज।

बाजार : हम अपनी चीजे बेचते ग्रौर शहर का माल खरीद करते है। गाँव मे ही जरूरत की चीजें नही बनाते। खरीदी करते ग्रौर बेचते, दोनो समय व्यापारी भाव तय करता है। इसलिए गाँववालो का माल सस्ते-से-सस्ते भाव पर लिया जाता है ग्रौर शहर का माल महँगे-से-महँगे भाव पर उन्हे बेचा जाता है।

साहूकार : विवाह, सूखा, बैल आदि के लिए किसान साहूकार की शरण जाता है। उसका व्याज कभी खतम नही होता ग्रौर न मूल ही कभी चुकता होता है। ऐसी हालत मे रखी गयी खेती साहूकार के कब्जे में जाने में कितना समय लगता है?

सरकार : लोगो की अपेक्षा रहती है कि स्कूल, अस्पताल,

सड़के, कृषि-सुधार, उद्योग-विस्तार आदि सारे कार्य सरकार को करने चाहिए, इसलिए अनाप-शनाप कर बैठाये जाते है। फिर सरकार कृषि-कर और दूसरे कर पैसे मे वसूल करती है, अनाज के रूप मे नही लेती। इसलिए किसान बाजार का सहारा लेता और गिरे हुए भाव पर अपना माल बेच देता है। सरकार का इन करो मे से बहुत कुछ पैसा फौज, कर-उगाही, व्यवस्था और शहरों की सुख-सुविधा मे अटक जाता है। जो थोडा बहुत गाँव मे पहुँचता है, वह भी ऊपर के किसानो को मिलता है। फिर कुछ बच जाय, बैलवालो का नबर लगता है। ऐसी अवस्था मे बकरीवाले को क्या मिलेगा ? वह तो मानो जनमा ही नही है।

व्यसन : इस प्रकार चारो ओर से लूट होने के कारण हताश ग्रामीण जूआ, शराब, सट्टा आदि व्यसनो का शिकार बन जाता है। अन्य पुरुषार्थ शेष न रहने के कारण देहातो मे मामूली-मामूली बातो पर झगडे-बखेडे होते रहते है, गुट पड जाते और पार्टियाँ बन जाती है। वर्तमान चुनाव की पद्धति से भी गुट बन जाते हैं। लडाई-झगडे अदालत में जाते है। वहाँ ग्रामीणो को वकील की शरण जाना पडता है। हर आदमी अलग-अलग शहरी लोगों के पास न्याय माँगने जाता है। इन सब कारणो से गाँवों का बहुत कुछ पैसा शहरो में जाता है।

रीति-रिवाज : ऐसे नीरस और उजाड जीवन में शादी-ब्याह जैसे प्रसग आनदमय प्रतीत होते हैं। ऐसे अवसर पर ग्रामीण अनाप-शनाप खर्च करता है। विवाह, दहेज, सगाई, तेरही आदि

प्रसगो के लिए कर्ज लेना पडता है। इन रीति-रिवाजो के कारण बहुत सारा पैसा शहरो मे जाता रहता है।

इनके अतिरिक्त बीमार होने पर हम शहरी डॉक्टरो की ओर दौडते है। अपने धधे का उत्तम शिक्षण न देकर शहर का निठल्ला और आलसी बनानेवाला शिक्षण अपने लडके-बच्चो को देने मे हम धन्यता महसूस करते है। ऐसी पढाई और शहरी वातावरण से लडका बिगड जाता है। फिर 'लडका बिगड गया' कहकर देहाती चिल्लाते है। उसे नौकरी न मिलने पर कोसते है। नौकरी मिल जाय, तब भी देहात की बुद्धि शहर मे गयी ही। यह शिक्षित लडका खूब पैसा कमाता है यानी पुन देहातो को खुलेआम लूटता है। इस तरह शिक्षण, दवा-दारू आदि के निमित्त से अगणित पैसा शहरो मे जाता है। मनोरजन की सुविधा गाँव मे न होने से सिनेमा के निमित्त से भी काफी पैसा शहर मे जाता है। मजदूर के मन लगाकर काम न करने तथा छोटे किसानो को काम मे उत्साह न रहने से भी पैदावार बहुत कम होती है।

ऊपर लिखे गये पाँचो मार्ग एक-दूसरे की मदद करते है। जैसे लगान देने के लिए बाजार की शरण जाना पडता है। विवाह के लिए साहूकार की शरण जाना पडता है। सबका परिणाम एक ही है। फिर व्यापारी, साहूकार, वकील, सरकार आदि से ग्रामीण अकेला-अकेला ही व्यवहार करता है। गाँव की एकता कर व्यवहार नही करते। इसलिए उचित लाभ नही मिल पाता। इन सारे छिद्रो को बद करने का एक ही उपाय है और वह है, ग्राम-राज्य का निर्माण।

आज गाँव मे समाज ही नही है। फिर समाज-विकास कैसे हो—ऐसा केन्द्रीय मत्री श्री दे का कहना है। समाज का मतलब है, एक साथ चलनेवाला समुदाय। आज ट्रैक्टरवाले, साइकिल-वाले, बैलवाले और बकरीवाले आपस मे झगडते है। गाँवो के सज्जन लोग निष्क्रिय हो गये है। गाँव मे कोई किसी पर अन्याय-अत्याचार करे, पर सज्जनो की यह वृत्ति हो गयी है कि 'मुझे क्या करना है ?' इस कारण हर गाँव मे बदमाशो और गुण्डो की बन आती है। ऐसी स्थिति मे गुण्डो द्वारा त्रस्त गाँव मे सर्व-साधारण व्यक्ति रहना पसद नही करता। वह निकट के शहर की तरफ दौडता है। ऐसे पलायन से गाँव और भी बिगड जाता है। इस प्रकार वर्ग-भेद और जाति-भेद से गिरे हुए, रात-दिन कल की चिंता से जर्जर और गुण्डो द्वारा ग्रसित गाँव का शोषण बाहर का कौन न करेगा ?

गाँव मे इतनी गदगी रहती है कि प्रवेश करते ही नाक बद करनी पडती है। वहाँ न दवा-दारू की सुविधा और न योग्य शिक्षक की ! हर गाँव मे स्कूल नही होता। जहाँ स्कूल है, वहाँ जो पढाई होती है, उसे पढाई भी कहा जाय या नही, यह प्रश्न मन मे पैदा होता है। गाँव मे मनोरजन की सुविधा भी नही। गाँव के घरो की हालत यह है कि न उनमे हवा आती है, न प्रकाश और न पर्याप्त पोषक-आच्छादक अन्न-वस्त्र ! गाँवो मे, विशेषकर आदिवासी क्षेत्रो मे, पीने का पानी मिलना भी कठिन है। मील-मीलभर से बहनो को पानी लाना पडता है।

इन देहातो मे आज जीवन की कोई भी सुविधा नहीं है।

इसीलिए ग्रामीणो की नजर शहरो की तरफ लगी रहती है। कपडा, शक्कर, तेल, उद्योग, शिक्षण, न्याय, रक्षण, दवा, कर्ज, सारी बातो के लिए आज गाँववालो को शहरो का मुँह देखना पडता है। देहातो मे न सुख है और न समाधान! शहरो मे मास्टरी की, क्लर्क की या चपरासी की एकआध नौकरी प्राप्त की जाय, वहाँ छोटा-मोटा घर किराये से लेकर एकआध लडके-बच्चे की पढाई की जाय, सिनेमा देखा जाय, होटलो मे जाया जाय—यह है आज के देहाती का स्वप्न! अपने ग्रामीण जीवन मे आज उसे कोई दम नही दीखता। पग-पग पर उसका अपमान होता है। बुद्धिमान्, धनवान्, अधिकारी–सभी उसे तुच्छ समझते है। उसे भी फिर ऐसा ही प्रतीत होने लगता है। अपने गाँव का अभिमान रह ही नही गया है। शहर के सरकारी कर्मचारी, तहसीलदार और गाँव के पटवारी, वन-रक्षक आदि नौकर काम तुरत नही करते। पटवारी, अदालत और साहबो के घर चक्कर लगाने की कोई सीमा है! लेकिन अगर थोडी-सी मुट्ठी खोल दी जाय, तो काम हाथोहाथ हो जाता है—यह नित्य का अनुभव है। गाँव की खेती मे कुएँ के लिए या पीने के पानी के कुएँ के लिए सीमेट नही मिलती। लेकिन वह देखता है कि शहरो मे बँगलो के लिए या सिनेमा-घरो के लिए चाहे जितनी सीमेट मिल जाती है। इसलिए वह निराश होता और चिढता है। ऐसी परिस्थिति मे चुनाव के समय उसे भाषणो द्वारा बताया जाता है कि 'आप लोग राजा है, हम आपके सेवक है।' इसका असर उस पर जले पर नमक छिडकने जैसा होता है।

शहर के मनुष्य की तरह देहात के आदमी को भी वोट का अधिकार मिल गया है, पर इतने से ही वह 'राजा' नही बन गया ! आज हमारे देश मे लोकशाही के नाम पर पूँजीपतियो और पढे-लिखो का राज्य हे । इसलिए इस अपमान, शासन की दीर्घसूत्रता और लूट तथा दरिद्रता का एक ही उपाय है और वह यह कि ग्रामीणो का ग्रामाभिमान जाग्रत होना चाहिए । अपने-अपने गाँवो को 'ग्राम-दान' बना देना चाहिए ।

तो, ग्रामराज्य हमारा ध्येय है । इसके लिए एक होकर हमे अपना राज्य स्थापित करना है—यह भावना ग्रामो मे निर्माण होनी चाहिए । 'ग्रामराज्य' का अर्थ यह है कि दूसरो पर या सरकार पर अवलवित न रहकर अपने पैरो पर खडा रहा जाय । गाँववाले जितनी अधिक सत्ता ऊपर-ऊपर के शासन को सौपेगे, उतने ही वे पराधीन बनेगे । अत ग्रामराज्य मे अधिक-से-अधिक सत्ता गाँव मे ही रहेगी । सब मिलकर एक होने के लिए गाँव मे से वे वर्ग खतम करने होगे, जो खीचतान या स्पर्धा पर आधृत हैं । वर्तमान भेद, वर्ग और स्वार्थो को कायम रखकर ग्रामराज्य की स्थापना कभी भी सभव नही । इसलिए गाँव को एकरूप बनाकर 'ग्राम-समाज' बनाना होगा । गाँव की सारी जमीन एक कर उसकी मालकियत गाँव की याने ग्राम-समाज की करनी होगी । इसीको 'ग्राम-दान' कहते है । ग्रामदान ग्रामराज्य की नीव है । इस तरह हम ग्रामदान तक पहुँचते है । अतएव अब हम ग्रामदान पर विचार करेंगे ।

ग्राम-दान

'ग्राम-दान' शब्द से लोग बेकार ही घबराते है। लोगों को लगता है कि ग्राम-दान यानी अपना सब कुछ किसी दूसरे को दे देना है। लेकिन ग्राम-दान का यह अर्थ नही है। इस संसार मे सब भगवान् का है। सूर्य, चन्द्र, बुद्धि, शक्ति, सब कुछ उसीका है। उसकी वस्तु उसे अर्पित करना ही ग्राम-दान है।

अपनी-अपनी जमीन, बुद्धि, संपत्ति—सब कुछ गाँव के लोग ग्राम-दान मे परमेश्वर को यानी गाँव को अर्पित करेंगे और फिर आपस मे बाँटकर लेगे। इसमे डर की क्या बात है? यह तो हम अपने कुटुम्ब मे हर रोज करते है। ग्राम-दान यानी अपने कुटुम्ब को बड़ा बनाना, गाँव पर कुटुम्ब की रीति लागू करना। पूंजीवाद कहता है कि श्रम मजदूरो का और संपत्ति मालिको की है। 'जिसका श्रम, उसकी दौलत' यह समाजवाद का सिद्धान्त है। सर्वोदय 'श्रम समाज का और संपत्ति ईश्वर की' मानता है। ग्राम-दान के बाद सब लोग अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार काम करेगे। फिर उसमे से अपनी जरूरत के अनुसार लेगे।

या यों देखिये! गाँव मे हम लोग अखंड कीर्तन अथवा 'गोपालकाला'* करते है। उस समय ज्वारी, गेहूँ, चावल आदि इकट्ठा करते है। फिर सब मिलकर गाँव की पगत करते है।

---

* श्रीकृष्ण की वन-भोजनलीला के अभिनय का एक प्रसिद्ध उत्सव, जो अमीर-गरीब सबकी एकता का प्रतीक है।

धनी ज्यादा देता है और गरीब कम। लेकिन सब भरपेट भोजन करते हैं। धनी ज्यादा देता है, इसलिए वह ज्यादा नही खाता और गरीब कम देता हे, इसलिए उसे कम खाने को नहीं देते।

आगे हम देखेंगे कि ग्राम-दान से उत्पादन तो बढेगा ही। लेकिन सिर्फ उत्पादन की बढती ही ग्राम-दान का रहस्य नही है। ग्राम-दान का रहस्य तो यह है कि हम सुख भी बाँट लेंगे और दुख भी। एक का सुख-दुख सबका सुख-दुख होगा। उससे सुख बढेगा और दुख घटेगा। आज गाँव मे थोडे-से लोग पेटभर भोजन करते है, बहुत-से आधा-पेट रहते है। लेकिन इसके बाद यह होगा कि खायेंगे तो सब और भूखे रहेंगे तो सब। अर्थात् ग्राम-दान से कुटुम्ब गाँव जितना बडा बनेगा।

गाँव मे रहनेवाले करीब-करीब सभी लोग अपनी-अपनी जमीन, बुद्धि और श्रम दे देते है, तो ग्राम-दान हो गया। गाँव के बाहर रहनेवालो की गाँव की खेती उनसे बात करके प्राप्त की जा सकती है। यही बात गाँव मे रहनेवाले और जिसकी गाँव मे खेती है, उस किसान की भी है। गाँव मे रहनेवाले किसी एक ने अपवादस्वरूप दान नही दिया, तो उसके कारण ग्राम-दान की घोषणा और उसके आगे के काम को छोड देने या आगे ढकेलने की जरूरत नही। ग्राम-दान मे अनेक प्रकार के लाभ हैं। इसी-लिए विचारको ने इस विचार का बहुत स्वागत किया है। प० जवाहरलाल नेहरू से लेकर कम्युनिस्टो तक, सबको यह विचार मान्य है।

सर्वोदयवादियो को ग्राम-दान का विचार बहुत पसद आया।

क्योंकि ग्राम-दान अर्थशास्त्र का एक शुद्ध आधुनिकतम विचार है। ग्राम-दान के कारण जमीन के क्षेत्र की विषमता खतम हो जायगी। छोटे-छोटे टुकडे जुट जायँगे। सब पर जवाबदारी आने के कारण कल के जमीदार आज श्रम करने लगेंगे और कल के मजदूर, जो 'कहा सो करनेवाले' थे, मन लगाकर बुद्धि-पूर्वक काम करेंगे। पुराने मालिकों और मजदूरों में अब तक चलनेवाला संघर्ष मिट जायगा। भूमि-सुधार के कार्य सहकार से चलेंगे। एक हो जाने से गाँव की शक्ति बढेगी। फिर सरकारी सहायता भी ठीक समय पर और ठीक प्रमाण में मिलेगी। क्योंकि अन्य गाँवों में सरकारी सहायता का लाभ केवल थोड़े-से लोगों को मिलता है। लेकिन ग्राम-दानी गाँवों में ऐसी स्थिति हो गयी है कि सरकारी सहायता का लाभ सबको मिलेगा। ऐसे गाँव को व्यापारी और साहूकार लूट नहीं सकते, क्योंकि अब व्यक्ति अलग-अलग व्यवहार न करेंगे। ग्राम-संघटन के द्वारा ही सारे व्यवहार चलेंगे। घास के एक छोटे-से तिनके को कोई भी तोड़-मोड़ सकता है, लेकिन जब उसकी रस्सी बन जाती है, तो उसमें हाथी को भी बाँध रखने की शक्ति आ जाती है। इसी तरह गाँवों में ग्रामोद्योग शुरू होंगे। गाँव के लोग आपस में अपने यहाँ के बुनकर, चमार, तेली, कुम्हार, बढई, लुहार आदि द्वारा तैयार चीजें उपयोग में लायेंगे। इसमें ग्रामोद्योग बढेंगे, गाँव की संपत्ति गाँव में रहेगी और गाँव धनी बनेगा। गाँव की बेकारी मिटेगी और गाँव स्वावलंबी होगा।

धार्मिक पुरुष तो ग्राम-दान के विचार से नाच उठते है।

क्योकि उससे आपस मे प्रेम और सहकार बढेगा। इससे समाज का नैतिक और सास्कृतिक स्तर ऊँचा उठेगा। इससे गाँववालो की आध्यात्मिक उन्नति होगी। वे कहते है कि अब तक 'मै-मेरा' छोड दो, ऐसा धर्म-पुस्तके और हम कहते आये, पर हमारा किसीने सुना नही। 'ग्राम-दान' से 'मेरी जमीन', 'मेरी सम्पत्ति' खतम हो गयी और 'हमारी जमीन', 'हमारी सपत्ति' की भावना प्रकट हुई। धर्म का काम हो गया। जब हम 'मेरा घर', 'मेरा खेत' कहते है, तब यह 'मेरा' ही मुझे आसक्ति के जाल मे फँसाता है। सारा गाँव हमारा घर बन गया, यानी मनुष्य व्यापक बन गया। उसकी छोटे-से घर सबधी आसक्ति छूट गयी।

पहले के ऋषि कहते थे कि 'घर छोड़ दीजिये, इससे आसक्ति छूटेगी।' उनका अनुकरण बहुत थोड़ो ने किया। किन्तु इससे उल्टे विनोबाजी कहते है कि तुम अपने कुटुम्बियो पर प्रेम करते हो, यह अच्छी बात है—इसे गाँव तक व्यापक बना दीजिये। एकदम तो कोई प्रेम कर नही सकता, इसलिए गाँव पर प्रेम करने का यह मध्यम मार्ग निकाला गया। अत जमीन देश की मालकियत की नही होगी, वह गाँव की मालकियत की होगी। विनोबाजी इस तरह वैराग्य न सिखाकर गृहस्थ-धर्म सिखा रहे हैं। गाँव एक कुटुम्ब बन जाने पर मेरी कृषि पाँच-पचास एकड न रहकर हजार-पाँच सौ एकड जमीन हमारी हो जायगी। सारे गाँव की खेती हमारी होगी।

इस तरह हमने देखा कि ग्राम-दान धर्म की कसौटी पर भी सही उतरता है। धर्म कहता है कि किसी एक को दुःख हो,

तो उसमें सबको साझीदार बनना चाहिए। किसी एक को ही भूखे न रहने दिया जाय। स्वयं कम खाकर दूसरे को खाने के लिए देना ही प्रेम है। इसे ही दया और करुणा कहते हैं। यही परमेश्वर का रूप है। ग्राम-दान के काम में साक्षात् करुणा प्रकट होती है। जमीन गाँव की मालकियत की करके धनी लोग गरीबों के लिए त्याग करते है, जैसे कि घर में बच्चों के होने पर माँ-बाप पहले उन्हींको खाने-पीने को देते और बच जाय, तो स्वयं खाते हैं। कुछ न बचे, तो भी ऐसे उपवास में उन्हें महान् आनन्द आता है। यह अवसर ग्राम-दान से ऊपर के वर्ग को मिलता है। मजदूर श्रम-दान करते हैं। वे मेहनत में धनवान् है। समय आने पर वे अपना काम छोड़कर मेहनत से गरीब धनी लोगों के खेतों पर काम करेंगे। इस तरह त्याग करने का महान् अवसर ग्राम-दान से सबको मिलेगा। इसलिए यह महान् धर्म-विचार है।

विज्ञान (साइन्स) ग्राम-दान के बारे में क्या कहता है? विज्ञान के कारण सारा जगत् नजदीक आ गया है। विश्व के किसी कोने में अगर लड़ाई हो रही हो, तो उसका असर सारे विश्व पर पड़ता है। इसलिए विज्ञान-युग में हमें अपने मन बड़े करने चाहिए, हृदय विशाल बनाने चाहिए। सबको मिल-जुल-कर काम करना चाहिए, नहीं तो हम नष्ट हो जायँगे। आज कोई भी दूसरों की मदद के बगैर टिक नहीं सकता। जगत् के साथ एकदम इस तरह घुल-मिल जाना तो कठिन है। उसमें भी कमजोर गाँव की तो लूट ही होगी। इसलिए हरएक को अपना गाँव एक कुटुम्ब मानना चाहिए। यह कठिन नहीं है। ग्राम-दान

होने पर सबका स्वार्थ एक हो जाने से गाँव को एक कुटुम्ब मानना आसान होगा। ग्राम-दान इसी विचार की प्रेरणा देता है। इसलिए ग्राम-दान वैज्ञानिक भी है।

राजनीतिक दृष्टि से ग्राम-दान कैसा है? राजनीतिज्ञ तो ग्राम-दान पर बेहद खुश है। वे कहते है कि प्रत्येक गाँव एक यूनिट (इकाई) बन जाय, तो स्वराज्य मे बड़ी भारी शक्ति पैदा होगी। गाँव मे शान्ति बनाये रखने मे कठिनाई न होगी। गाँव के लिए योजनाएँ बनाना सरल होगा। गाँव-गाँव मे राज्य हो जाय, तो गाँव-गाँव मे अच्छे कार्यकर्ता तैयार होगे। आज हमने राजनीति को अनुचित महत्त्व दे रखा है। हम कहते रहते है कि सब कुछ केन्द्रित सत्ता ही करे, कानून से हो। इसीके कारण आज विश्वशान्ति आइक, बुल्गानिन जैसे दो-चार व्यक्तियो के हाथ की बात बन गयी है। सारे महत्त्व के काम गाँववाले मिल-जुलकर कानून की परवाह किये बिना करे, तो राजकीय नेताओ की सत्ता क्षीण हो जायगी। इससे युद्ध करना दो-चार व्यक्तियो के हाथ मे न रहेगा, विश्व की जनता के हाथ मे रहेगा। जनता शान्ति-प्रिय है। अतएव ग्राम-दान उत्तम सरक्षण-योजना है। ग्राम की जनता द्वारा एकमत से चुनाव करे, तो उसका प्रभाव ऊपर के चुनावो पर भी पडेगा। चुनाव मे के तिकडम और छल-प्रपचो पर रोक लगेगी। गाँव मे पार्टी, दल न रहने से ऊपर के दल भी क्षीण हो जायँगे। इस तरह राजनीतिक जीवन भी शुद्ध हो जायगा। विश्वशान्ति निकट आयेगी।

शिक्षा-शास्त्री भी ग्राम-दान पर मुग्ध हैं। क्योकि इससे

सब लडको को उत्तम कर्मप्रधान शिक्षण प्राप्त होगा। आज तो केवल ऊपर के वर्ग के लडके ही पढ पाते है। ऊपर के वर्ग के लोगो मे श्रम नही है। इसलिए उनके लडको को कर्महीन शिक्षण मिलता है। निम्नवर्ग के लडके शिक्षण प्राप्त नही कर सकते। इसलिए वे ज्ञानशून्य कर्म करते है। ग्राम-दान से सब लडको को कर्ममय शिक्षण मिलेगा।

समाज-शास्त्री भी ग्राम-दान के विचार को उत्तम बताते है। ग्राम-दान से जाति-भेद मिटने मे बडी मदद मिलेगी। कोरापुट जिले मे ग्राम-दान के कारण जातिभेद मिट रहा है। ग्राम-दान से सामाजिक सुधारो की गाडी तेज दौडने लगेगी।

शान्ति और व्यवस्थावादी कहते हैं कि ग्राम-दान से चारो ओर व्यवस्था फैल जायगी। आज गरीब को दिन मे काम नही मिलता, तो वह रात मे काम (चोरी) करता है। उसे जेल मे बन्द कर दिया जाता है। वहाँ उसे भोजन, काम, नीद आदि सब व्यवस्थित रूप से मिलता है। सजा उसे न होकर घर के बाल-बच्चो को ही हो गयी, क्योकि घर का कमानेवाला गया। यह कैसा न्याय है ! क्या यही व्यवस्था है ? इससे क्या शान्ति स्थापित होगी ? फिर पुलिस और सेना बढेगी। इसमे से अनाप-शनाप कर्ज का भार पडेगा ही। इसलिए ग्राम-दान से शान्ति और व्यवस्था के सारे प्रश्न हल हो जाते हैं।

इस तरह ग्राम-दान का विचार सबको मान्य है। इसमे सबका हित किस तरह समाया है, यह हम आगे देखेगे।

● ● ●

सवका हित : ६ :

ग्राम-दान मे सभी का हित है। वर्तमान परिस्थिति में गाँव मे बड़े किसान, छोटे किसान, कारीगर, मजदूर—किसीको भी पूरा समाधान नही है। ग्राम-दान सवको एक करनेवाला धर्म-विचार है, जो सवके सामने आया है। इससे सवके हृदय एक बनेगे। गाँवों मे प्रेम बढेगा। ग्राम-दान मे सवका भला कैसे है और इसमे प्रत्येक को क्या भाग लेना चाहिए, यह हम देखे।

बड़ा किसान : बड़े किसान का ग्राम-दान मे क्या हित है? हमारे देश मे सामाजिक और आर्थिक विषमता के कारण झगड़े होते है। आर्थिक न्याय की दृष्टि से देखा जाय, तो सवको उचित हिस्सा देकर अपने हिस्से मे आनेवाली जमीन ही हरएक को रखनी चाहिए। इसी तरह अपने से गरीव की मदद करना हर-एक का धर्म है। इस धर्म का पालन करने से ही समाज टिक सकेगा।

अंग्रेज सत्ता छोड़कर चले गये। राजा-महाराजाओं ने राज्य-पद छोड़ दिया, पर वे भूखे नही रहे। अगर वडे किसान प्रेम से अपनी जमीन ग्राम-दान में दे देते हैं, तो लोग उन्हें अपने माता-पिता की तरह समझेंगे और सँभालेंगे। उनके खिलाफ फैला हुआ द्वेष एकदम खतम हो जायगा।

आज के अनेक गाँव वडे किसानों के ही वसाये हुए है। ये उन्हीके नाम से पहचाने भी जाते हैं। गाँव के लोगों की

सार-सँभाल उन्होंने माता-पिता की तरह की है। इस ऐतिहासिक परंपरा के लिए यह शोभादायक ही है।

इन बड़े किसानों को चाहिए कि गाँव पर से सरकारी अधिकारियों, व्यापारियों और साहूकारों के आक्रमण हटायें। उन्हें अपनी शक्ति, वुद्धि, संगठन-कुशलता का लाभ गाँववालों के लिए करना चाहिए। इसी तरह स्कूल, न्यायदान, अस्पताल, सहकारी संस्था, सरकार से संबंध, अनेक उद्योग-धंधों आदि द्वारा वे गाँव की हर तरह सेवा कर सकते है। ऐसा त्यागी, सेवामय जीवन जीनेवाले बड़े किसानों को लोग किसी प्रकार की कमी महसूस न होने देंगे।

आज का बड़ा किसान कर्ज के वोझ से दब गया है। लड़के-लड़कियों के विवाह, पढ़ाई आदि की चिन्ता उसे सता रही है। ग्राम-दान के लिए गाँववालों द्वारा जमीन दिये जाने पर कर्ज का वोझ सहज ही सारे गाँव पर पड़ेगा। गाँव में विवाह सार्वजनिक उत्सव माना जायगा। गाँव को कुटुम्ब मानने पर गाँव के अन्य लड़कों जैसा ही शिक्षण खुद के बच्चों को मिलेगा।

आज बड़े किसान के पास सौ-दो सौ एकड़ जमीन होती है। इस खेती के उत्पादन में से आधा तो मजदूरों की मजदूरी के रूप में देना पड़ता है। मजदूर मन लगाकर काम नहीं करते, इसलिए पैदावार कम होती है। मजदूरों पर देखरेख रखने के लिए दिवानजी, (मुकद्दम) रखना पड़ता है। आमदनी का एक हिस्सा इसीमें चला जाता है। कल को कोई मजदूर मिलेगा या नहीं, यह एक नयी चिन्ता निर्माण हो गयी है। सालदारों को इस साल क्या देना पड़ेगा, यह भी एक प्रश्न ही है। संग्रह के

कारण चोरी की चिन्ता है। सीलिंग, वंशानुगत कानून, मृत्यु-कर आदि का भय है ही। इन चिन्ताओं के करते सौ-पाँच सौ एकड़वाले किसान के हाथ केवल चौथा हिस्सा पड़ता है। तीन हिस्से जमीन का भार वह बेकार ही अपने सिर पर धरे रहता है। अमीरी के कारण सबकी निन्दा का पात्र तो उसे बनना ही पडता है। यह भी नही कि आज अमीरी की पहले जैसी कीमत रह गयी हो। सभी गरीबो की आँखों मे वह चुभता है। किसी भी वस्तु का उपयोग खुल्लमखुल्ला नही कर सकता। क्योकि पड़ोस की भयकर गरीबी देख उसका मन ही उसे खाता रहता है। रात को सुख-सन्तोष की नीद नही। शरीर-श्रम से दूर हो जाने के कारण उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है और इसी कारण निरंतर डॉक्टर की बोतले घर मे रहती हैं। चिन्ता और भय का यह जीवन जीकर आज धनी लोग क्या कमा रहे है?

ग्रामदान मे अगर धनी लोग शामिल हो जायँ, तो उनकी सारी चिन्ता और सारा भय दूर हो जायगा। अवश्य ही उन्हे जमीन आज की अपेक्षा कम मिलेगी, पर औरो जितनी कम नही। ग्राम-कुटुम्ब मे शामिल हो जाने पर गाँववाले उन्हे दूसरो की अपेक्षा ज्यादा जमीन आनन्द से देंगे। जमीन का वितरण गणित की समानता से न होकर वह कुटुम्ब की स्थिति के अनुपात से बाँटी जायगी। कुटुम्ब मे दस रोटियाँ और पाँच आदमी हो, तो प्रत्येक को दो-दो रोटी न मिलकर अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार मिलती है। लेकिन खाते सब मिलकर ही हैं। कुटुम्ब का यही न्याय गाँव पर लागू होगा।

ऐसे अनेक उदाहरण प्रत्यक्ष मे भी देखने को मिले है। मँगरौठ के दीवान साहब को गाँववालो ने प्रेम से उनके हिस्से से ज्यादा जमीन दी और स्वय कम रखी। धनवान् अगर प्रेम के मार्ग पर एक कदम चले, तो गरीब दो कदम चलेगे। जगह-जगह का यही अनुभव है। प्रेम से प्रेम ज्योतित होता और द्वेष से द्वेष और अधिक वढता है—इस कहावत के अनुसार श्रमिक भी धनवान् को मिली जमीन मे श्रम-दान करेगे। आखिर आदमी जमीन अधिक क्यो रखता है ? कल की चिन्ता न रहे, इसीलिए न ? मिट्टी तो कोई साथ ले नही जाता। आज अधिक जमीन से चिन्ता वढ गयी है। धनवान् की सभी चिन्ताएँ दूर होंगी। भारी-भरकम आदमी की तरह धनवानो ने अधिक जमीन का बोझ ले लिया है। भारी-भरकम आदमी की चरवी घट जाय, तो उसका स्वास्थ्य सुधरेगा और आयु भी वढेगी। ऐसा ही धनवानो का होगा। जो चीज पैसे से कभी नही मिल सकती, वह धनवान् को पहले ही मिल जायगी। उसे सवका प्रेम प्राप्त होगा।

मध्यम किसान : मध्यम किसान पर देश का वहुत भरोसा है। वह गाँव की रीढ की हड्डी है। उसका जीवन सीधा-सरल, मेहनती और सात्त्विक है। देश की सस्कृति उसीने सँभाल रखी है। लेकिन आज उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय है। उसकी खेती अलग-अलग अनेक टुकडो मे विखरी होने से उसे जोतने की दिक्कत है। साहूकारो का पाश हमेशा चारो ओर विछा रहता है। व्यापारी उसे सपरने नही देते। सरकारी अधिकारियो का उसकी तरफ ध्यान नही। मजदूरो का सहयोग नही। महँगी, पढाई, दवा-दारू और न्याय के कारण उसका जी पस्त हो गया है।

ग्रामदान में उसे एकत्र व्यवस्थित खेती मिलेगी। माल की खरीद-फरोख्त की व्यवस्था गाँव की सहकारी दूकान के मार्फत होगी। गाँव और सरकार की शक्ति उसके पीछे खड़ी रहेगी। उसे इस बात का धोखा या भय न रहेगा कि जमीन साहूकार को चली जायगी या उसे व्यापारी लूट लेगा। उसे सुखी और नित्य विकासशील जीवन प्राप्त होगा।

छोटा किसान और मजदूर : चार-पाँच एकड़वाले किसानों और मजदूरों का जीवन समान रूप से दीन-हीन है। उन्हें हमेशा भुखमरी और अपमान सहना पड़ता है। ग्रामदान में सारी जमीन का वितरण होने पर उन्हें कष्ट करने पर पेटभर खाने जितनी जमीन मिलेगी। आज उसकी मेहनत की, पसीने की कमाई दूसरा ही खा जाता है। ग्रामदानी गाँव में उसे दूसरों जितना भरपूर मिलेगा। ग्रामदान में उसे कुछ भी खोना न पड़ेगा। उल्टे उसकी गरीबी और गुलामी की बेड़ियाँ टूट जायँगी और वह इज्जत के साथ जी सकेगा। मजदूर कहेगा कि जैसे जमीन गाँव की है, वैसे ही मैं भी अपनी मेहनत गाँव को अर्पित करूँगा। गाँव मे जिसे मेहनत करने की आदत नहीं है, उसकी मदद के लिए दौड़ पड़ूंगा।

विनोबाजी कहते हैं कि मैं गरीबों से चार कारणों के लिए जमीन माँगता हूँ :

(१) अपने से गरीब की मदद करना हरएक का धर्म है।

(२) जमीन पर से सबकी आसक्ति कम करानी है। जमीन पर किसीकी मालकियत न रहनी चाहिए। जैसे पैगे-

वाला सैकडो एकड का मालिक है, वैसे ही गरीब भी दो-चार एकड का मालिक हे। मजदूर भी श्रम पर अपनी मालकियत मानता है। इन छोटी मालकियतो पर ही बडी मालकियतें आधृत है।

(३) गरीब के दान से धनवालो के हृदय पिघलगे और एक नैतिक शक्ति निर्माण होगी।

(४) गरीबो के दान से सत्याग्रहियो की सेना बनेगी और वे इस आन्दोलन के सिपाही बनेंगे।

परोपकारी लोगो के ध्यान मे गरीबो के दान देने की बात नही आती। सब जानते है कि श्रीकृष्ण ने सुदामा के तदुल लिये बिना उसे कुछ दिया नही। सुदामा से उन्हे कुछ लेना थोडे ही था। उन्हे तो देना ही था। किन्तु लिये बिना कुछ न देने की निष्ठुरता कृष्ण को दिखानी पडी। असल मे वे सुदामा की शक्ति बढाना चाहते थे, उसे भिखारी जैसा दीन नही बनाना चाहते थे। जमीन और श्रम देने से गरीबो की शक्ति बढेगी। गरीब कितना त्याग करते हैं ! उन्हीके श्रम पर सारा विश्व चल रहा है। लेकिन उन्हे अपनी शक्ति और त्याग का भान नही है। जब वे अपने पडोसी के लिए, गाँव के लिए श्रम-दान करेंगे, तभी उनका त्याग प्रकट होगा। उनके त्याग के सामने कजूस धनी टिक न सकेंगे। जो धनी उदार है, वे तो पहले ही ग्रामदान मे शामिल हो चुके होंगे।

साहूकार : समाज मे धन का लोभ बढने के कारण साहूकार भी लोभी बन गये है। ग्रामदानी गाँव मे सभी अपना

लोभ छोड चुके होगे, इसलिए साहूकार भी अपना स्वार्थ न साध पायेंगे। सहकारी दूकान द्वारा जो कर्ज गाँववालों को दिया जायगा, उस संबंध मे उनकी सलाह और मार्गदर्शन गाँव को मिलेगा। गाँव भी उसकी सबकी तरह चिन्ता करेगा।

व्यापारी : भावो मे तेजी-मंदी हो जाय, माल खराब निकल जाय, तो दूकानदार को खोटे वजन, माप आदि अनुचित बातो का पाप करना पड़ता है। ग्रामदानी गाँव मे गाँव की ओर से एक ही मिली-जुली दूकान रहेगी। इससे दूकानदार को नफा-नुकसान की चिन्ता ही न रहेगी। उत्तम मार्ग से गाँव की सेवा करके निश्चित रूप मे वह शीलवान् जीवन जी सकेगा।

शिक्षक, पटवारी, कलाकार आदि : बुद्धि का श्रम करनेवालो का समाज मे क्या स्थान रहेगा ?

प्रत्येक को शरीर-स्वास्थ्य और बुद्धि-विकास के लिए शरीर-श्रम करना आवश्यक है। इसलिए ये सब लोग कुछ घण्टे शरीर-श्रम करेंगे। अपनी कला और ज्ञान का दान देकर गाँव को ज्ञानी और सुन्दर बनाकर रहेंगे। गाँव उनकी चिन्ता करता रहेगा।

कारीगर : ग्रामदानी गाँव मे कारीगरो और उद्योग-धधे करनेवाले लोगो के बारे मे क्या कार्यक्रम रहेगा ?

गाँव मे कुम्हार, चमार, लुहार, बढई, नाई, दर्जी आदि अनेक लोगो के धधे टूटते जा रहे हैं। उनके शिक्षण की, उनके धंधो के लिए पूंजी की और उत्पादित माल बेचने की कोई सुविधा नही है। उनकी स्थिति दिनोदिन बिगड़ रही है।

ग्रामदानी गाँवों में होनहार बच्चों को उद्योग-शिक्षण देने के लिए शिक्षण-संस्था में भेजने की व्यवस्था गाँववाले करेंगे। धंधे के लिए लगनेवाली पूंजी गाँववाले और सरकार देगी। इसी तरह उनके धंधे में लगनेवाले कच्चे माल की खरीदी और पक्के माल की बिक्री की व्यवस्था दूकान के मार्फत की जायगी। इस तरह धंधे बढ़ेंगे और बेकारी दूर होगी। गाँव की लक्ष्मी गाँव में रहेगी और गाँव के कारीगर तथा धंधेवाले सुखी होंगे।

स्त्रियाँ : अपने सब बच्चे सुखी हों, यही सब माताओं की इच्छा रहती है। यही बात क्या धरती-माता को अपने पुत्रों के बारे में न लगती होगी ? मातृ-शक्ति स्त्रियों की बहुत बड़ी शक्ति है। इसलिए अपने घर की सारी जमीन ग्रामदान में अर्पण करके इस धार्मिक कार्य में उन्हें मदद करनी चाहिए।

आज के समाज में रसोई और बच्चों से आगे स्त्रियों को कोई स्थान नहीं है। ग्रामदानी गाँव में स्त्रियों को पुरुषों की ही तरह उनके जीवन के लिए आवश्यक शिक्षण दिया जायगा। खेती और घरेलू कार्यों के सिवा अनेक हस्तोद्योग और कला के काम वे सीखेंगी। गाँव का कारोबार चलाने का मौका उन्हें पुरुषों की तरह ही मिलेगा। घर के जेलखाने से उनकी मुक्ति होगी और उन्हें समाज में सम्मान का स्थान प्राप्त होगा।

इस प्रकार ग्रामदान में सभीका हित है। इसलिए लोग ग्राम-दान कर रहे हैं। ऐसे ग्राम-दानी गाँवों में 'ग्राम-राज्य' कैसे निर्माण होगा, यह हम देखेंगे।

• • •

ग्राम-राज्य

राज्य-व्यवस्था : ग्राम-राज्य का संघटन नीचे लिखे अनुसार रहेगा।

प्रत्येक गाँव में एक ग्रामसभा रहेगी। उस ग्रामसभा में प्रत्येक कुटुम्ब में से एक प्रौढ़ पुरुष या स्त्री रहेगी। ग्रामसभा सर्वसम्मति से पांच से लेकर नौ व्यक्तियों तक की एक सर्वोदय-पंचायत बनायेगी। कृषि, ग्रामोद्योग, शिक्षण, आरोग्य, योजना, न्याय, अन्य देहातों तथा सरकारी सदस्यों से संबंध आदि सारे काम ग्रामसभा के जिम्मे रहेंगे। वही सर्वसाधारण नीति तय करेगी। पंचायत इस नीति को कार्यान्वित करेगी। वह प्रतिदिन का कामकाज भी करेगी। पंचायत गाँववालों पर सत्ता चलाने के लिए न रहेगी। परिवार में जैसे माता-पिता अपने बाल-बच्चों की चिन्ता करते हैं, वैसे ही पंचायत सबके कल्याण की चिन्ता करेगी।

ऐसी अनेक सर्वोदय-पंचायतें अपने में से किसी होशियार व्यक्ति को तहसील-पंचायत में भेजेंगी, जो सौ गाँवों की बनेगी। ऐसी अनेक तहसील-पंचायतें अपने में से जिला-पंचायत बनायेंगी। इसी पद्धति से प्रांत, देश और विश्व के लिए सरकार बनेगी। जैसे-जैसे हम ऊपर जायेंगे, वैसे-ही-वैसे सत्ता क्षीण होती जायगी। अन्त में विश्व-पंचायत के पास केवल नैतिक सत्ता रहेगी। ग्रामसभा जितनी और जिन विषय की सत्ता ऊपर की पंचायत को

देगी, उतनी ही उसकी सत्ता रहेगी। इन सब पचायतो मे कम-से-कम चौथाई सदस्य बहने रहेगी।

ग्रामसभा और सारी पंचायतो के काम एकमत से चलेगे। कुछ छिटपुट मतभेद रहेगे, तो लोग अपने मतभेदो को रखते हुए भी वर्ताव के समय तटस्थ रहेगे। इसे हम 'सहमति' कहेगे। किसी महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर मतभेद होने पर उस समय वह विपय छोड दिया जायगा। सब लोग एकमत होने की राह देखेगे। किसी भी परिस्थिति मे वहुमत या अल्पमत न रहेगा। हमे 'तीन वोले परमेश्वर' या 'चार वोले परमेश्वर' का याय लागू नही करना है, 'पाँच वोले परमेश्वर' यह प्राचीन न्याय ही कायम रखना है।

गाँव का आर्थिक व्यवहार ठीक-ठीक चलाने के लिए और इस सवध मे गाँववालो का मार्गदर्शन करने के लिए हर गाँव मे एक सहकारी समिति रहेगी। यह समिति गाँव मे माल की खरीद-विक्री के लिए 'स्टोर' (भण्डार) चलायेगी। गाँववाले अपना माल समिति के मार्फत खरीदेगे-बेचेगे। वे साहूकार से कर्ज न लेगे। सहकारी समिति गाँव की चारो ओर से होनेवाली आर्थिक लूट रोकेगी और सवको काम देने की योजना वनाने मे मदद करेगी। गाँव से वाहर जानेवाले और गाँव मे आनेवाले माल पर सोसाइटी (समिति) का नियंत्रण रहेगा। इस तरह दरिद्रता दूर कर गाँव मे समृद्धि लाने के काम मे सहकारी समिति अगुवापन लेगी।

ग्राम-पचायत, सोसाइटी और गाँववालो के अन्य कार्य ठीक ढंग से चलाने के लिए मदद करनेवाला एक सेवक-समुदाय

रहेगा। यह सेवक-वर्ग सत्ता मे न फँसेगा। यह सबसे अधिक काम और त्याग करनेवाला वर्ग रहेगा। सबका भला चाहनेवाला यह सेवक-वर्ग ग्रामराज्य को साकार बनाने का काम करेगा। यह सेवक-समुदाय ग्रामराज्य की रीढ की हड्डी होगी। इन सेवको की संख्या जितनी अधिक और स्तर जितना ऊँचा रहेगा, उतनी ही गाँव की प्रगति होगी।

ग्रामराज्य मे काम कैसे होगे और कौन करेगे, यह हमने देखा। अब यह देखे कि ग्रामराज्य मे कौन-से काम होगे :

कृषि : कृषि गाँव का प्रमुख धधा है। कृषि की व्यवस्था कैसे की जाय, यह गाँववाले मिलकर तय करेगे। इस बारे मे तीन पद्धतियाँ हो सकती है

१. सारी कृषि सामुदायिक बनाना।

२ गाँव के लिए कुछ कृषि सामुदायिक रखना, कुछ लोगो की सहकारी कृषि रहे और शेष अलग-अलग जोती जाय।

३ गाँव के लिए कुछ कृषि सामुदायिक रखी जाय और बाकी की सब अलग-अलग जोती जाय।

(१) पहले हम सामुदायिक कृषि का विचार करे। गाँववाले विचार करेगे कि हमने गाँव को मालकियत समर्पित कर दी। अब खेती की मशक्कत भी मिलकर ही करेंगे। ऐसी सामुदायिक कृषि की व्यवस्था सारे गाँववाले देखेगे। प्रतिदिन का काम चलाने के लिए ग्राम-सभा एक कृषि-समिति चुनेगी। होनेवाली पैदावार से लगान, स्कूल, अस्पताल आदि सामुदायिक काम किये जायँगे। आगामी वर्ष के लिए पूँजी भी बचा रखी

जायगी। सकट-काल के लिए उत्पादन का कुछ अश अनाज के भडार मे जायगा। बचा हुआ उत्पादन सारे किसान आपस मे बाँट लेगे। जिसने जितना काम किया हो, उस अनुपात मे भी लोग पैदावार को बाँट सकेगे। इससे भी श्रेष्ठ तो यह होगा कि घरो मे जितने लोग हो, उसी हिसाब से बँटवारा हो। अथवा दोनो के बीच का मार्ग भी निकल सकता है। सामुदायिक खेती मे सभी लोग श्रम-दान करेगे। इससे प्राप्त उत्पादन से लगान, स्कूल, अस्पताल, देवालय आदि सार्वजनिक सस्थाओ का खर्च चलेगा। आज वाई में सामुदायिक खेती हो रही है।

न केवल सामुदायिक खेती ही, बल्कि सामुदायिक जीवन का भी एक अच्छा दृश्य फिलस्तीन मे 'क्विट्स' नामक ढाई सौ गाँवो ने (लोकवस्तियो ने) निर्माण किया है। वहाँ सामुदायिक भोजनालय है। फसल वे सदस्यो मे बाँटते नही, 'किवट्स' ही सबकी आवश्यकताओ की पूर्ति करता है। फिलस्तीन के लोगो को 'किवट्स' पृथ्वी के स्वर्ग जैसा लगता है।

(२) अथवा जितने गाँववाले तैयार होगे, वे सामुदायिक खेती करेगे। थोडी-सी खेती पूरे गाँव के लिए सामुदायिक खेती के रूप मे अलग रखी जायगी। बाकी की खेती बचे हुए लोग अलग-अलग करेंगे। आज 'मँगरौठ' मे यही प्रयोग चल रहा है।

(३) अथवा गाँववाले ऐसा भी तय कर सकते हैं कि सारी खेती अलग-अलग करने के लिए बाँट ली जाय। केवल थोड़ी-सी (दसवे हिस्से तक) खेती सामुदायिक रखी जाय। यह तीसरी पद्धति है।

खेती बाँटते समय घर में आदमियों की संख्या के अनुसार वितरण होगा। जिनका मुख्य पेशा कृषि न होकर कोई दूसरा है—जैसे बढ़ई, शिक्षक, तेली, चमार आदि—उन्हें भी थोड़ी जमीन मिलेगी। हर पाँच-दस वर्षों में आवश्यकतानुसार ग्राम-सभा कृषि का पुनर्वितरण करेगी। प्रत्येक परिवार को खेती पर मेहनत से पैदा की हुई फसल मिलेगी।

इस प्रकार खेती या तो सामुदायिक रहेगी या हरएक को करने के लिए मिलेगी। किन्तु उस पर मालकियत किसी भी व्यक्ति की न रहेगी। खेती परमेश्वर की है। जैसे हवा, पानी और प्रकाश का मालिक परमेश्वर है, वैसे ही पंचमहाभूतों में से पृथ्वी यानी भूमि का मालिक भी परमेश्वर ही है। खेती परमेश्वर की ओर से भरण-पोषण के लिए गाँव को मिली है। इसलिए कृषि का ग्रामीकरण होगा। कोई भी गाँव की खेती बेच न सकेगा। रेहन, ठीका, बटाई, मक्ता आदि प्रकारों में किसी दूसरे को दी न जा सकेगी। बीच के समय लोग जमीदार की खेती श्रम-दान से जोत देंगे। धीरे-धीरे जमीदार और उसके बच्चे खेती पर श्रम करने लगेंगे या दूसरे धंधे ढूँढ़ेंगे। साहूकार के पास भी किसीकी खेती न जायगी। इस तरह ग्राम-दान के कारण किसान खेती रेहन रखकर कर्ज निकालने का लोभ भी न बढ़ायेगा। गाँव की मालकियत की इस युक्ति के कारण किसान और साहूकार, दोनों के ही लोभ का रास्ता बन्द होकर इसमे दोनो का ही हित सध जाता है।

अलग-अलग खेती रखकर भी लोग मशक्कत के कुछ कामों

मे—बोवाई, रखवाली, गुडाई आदि मे—सहकार कर सकेगे। कुछ छोटे औजार व्यक्तिगत रहेगे, कुछ वडे औजार गॉव के रहेगे। माल की खरीद-बिक्री सहकारी भडार के मार्फत चलेगी। खेती का व्यवहार अलग-अलग रखने पर भी इतना सहकार हो सकता है। गॉव मे खेती सामुदायिक हो जाय या कुछ काम सहकार से चलने लगें, तो इसका अर्थ यह नही कि सारे चूल्हे एक जगह आ गये है।

खेती मे छोटे-मोटे सुधार करने की जिम्मेदारी प्रत्येक कुटुम्ब पर रहेगी। वडे पैमाने के सुधार सामुदायिक तौर पर ग्रामसभा करेगी। गॉव के लिए जो-जो आवश्यक हो, उसे गॉव-वाले बोयेगे। पैदावार का मुख्य लक्ष्य बाजार न होकर आवश्यकताओ की पूर्ति रहेगा। अतएव 'डालडा' के लिए मूँगफली न बोकर जितनी लगती हो, उतनी ही वह बोयी जायगी। गॉव मे दो वर्ष का अनाज सदैव भडार मे रहेगा। लगाने के लिए बिना सूद के उचित पूँजी मिलेगी। ग्रामदानी गॉव मे ठीका और नफे के साथ ही सूद भी वद हो जायगा। पानी-सप्लाई, अच्छे बीज और सुधरे हुए औजार, मेड बाधकर जमीन का कटाव रोकने, जमीन को समतल करने आदि से पैदावार बढेगी। केवल जमीन के कटाव का ही विचार करे, तो हर बरसात मे तीस करोड एकड मे से पद्रह करोड एकड जमीन मे प्रतिवर्ष ५०-६० गाडी मिट्टी बह जाती है। कटाव रोकने का काम अकेले-दुकेले या सिर्फ सरकार से बन नही सकता। उसके लिए गॉव के सभी लोगो के हाथ लगने चाहिए और जमीन गॉव की होनी चाहिए। इन सभी

सुधारो से हगामे की अनिश्चितता कम हो जायगी। गाँव मे न तो कोई मालिक और न कोई मजदूर! सभी गाँव के सेवक बन जायँगे।

ग्रामोद्योग : लेकिन सिर्फ कृषि-सुधार से ग्रामराज्य स्थापित न हो जायगा। जिस तरह हम भारत मे सभी चीजें तैयार करने का यत्न करते है, उसी तरह प्रत्येक गाँव की प्राथमिक आवश्यकताएँ पूरी होनी ही चाहिए। अन्न-वस्त्र, घर, शिक्षा और स्वास्थ्य, इन चीजो को हम गाँव मे ही पूरी कर लेगे। जहाँ तक हो सके, गाँव मे तैयार होनेवाले कच्चे माल का पक्का माल गाँव मे ही बनाया जायगा। गाँव मे तेल-घानी होगी। अन्य उद्योग-धधे भी चलेंगे। इनसे गाँव के हर आदमी को काम मिलेगा और गाँव से बाहर जानेवाली सम्पत्ति का प्रचण्ड प्रवाह रुक जायगा। एक सेर रूई की कीमत एक रुपया, तो उससे बननेवाले कपडे की कीमत पाँच रुपये। हम पैदावार करते है एकगुना और गँवाते हैं चौगुना! उद्योग के कारण गाँव मे कला-कौशल वापस लौटेगा। गाँव की आर्थिक इमारत खेती के एक ही स्तभ पर खडी न होकर अनेक आधारो पर खडी की जायगी, जिससे वह अत्यधिक स्थिर होगी। आज बडे उद्योगो से सिर्फ पचीस लाख लोगो को काम मिल रहा है। सौ वर्ष मे इतनी प्रगति हुई! सिवा यन्त्रोद्योग के लिए पूँजी भी नही। इसलिए एकमात्र स्वावलबन और ग्रामोद्योग ही गाँवो के लिए तारक मत्र है। गाँव के प्रत्येक कुटुम्ब के पास जमीन रहेगी और वह घर मे ही कृषि के सहायक धधे के रूप मे उद्योग भी करेगा। अनेक धधे करने से कुटुम्ब की सास्कृतिक उन्नति भी होगी।

शिक्षक : गाँव-गाँव पाठशाला रहेगी। यह पाठशाला जीवनोपयोगी सारा शिक्षण देगी। कर्तृत्वशून्य विद्यापीठ की अपेक्षा यह शाला वास्तविक विद्यापीठ बनेगी। शिक्षा बुनियादी तालीम की नयी पद्धति से दी जायगी। फलस्वरूप ग्रामराज्य का अभिमान रखनेवाले उत्तम नागरिक गाँवो से निर्माण होगे। प्रारम्भिक रूप मे हर गाँव मे सुबह एक घण्टा पाठशाला चलेगी। धीरे-धीरे उसका रूपान्तर पूरे समय की पाठशाला मे हो जायगा। प्रौढो के लिए एक घण्टे की रात्रि-पाठशाला की कक्षा चलेगी।

स्वास्थ्य : स्वास्थ्य के लिए गाँव से बाहर के डॉक्टरो पर निर्भर न रहा जायगा। इसके लिए खासकर लगायी हुई वनस्पतियो से औषध बनेगे। स्वास्थ्य के नियमो मे सबको परिचित करा दिया जायगा, जिससे रोग काबू मे आयेंगे। फलस्वरूप शिक्षा और स्वास्थ्य के कारण शहर की ओर जानेवाला बहुत-सा धन बच जायगा।

न्याय : आर्थिक रचना प्रतियोगिता की अपेक्षा एक-दूसरे की मदद पर खडी करने और गरीबी मिट जाने के कारण झगडे-टटे भी कम होगे। न्यायदान का लक्ष्य अपराध की जड खोजकर उसे मिटाना होगा। अपराधी को मानसिक रोगी समझकर उसका योग्य उपचार किया जायगा। जैसे, गरीबी के कारण चोरी करनेवाले को कृषि देने की बात हम पीछे पढ ही चुके है। जिस गाँव मे झगडे-टटे नही होते, वह रामराज्य है। हमारा लक्ष्य उस रामराज्य की ओर जाना ही रहेगा।

लूट कैसे रुकेगी ? ये सारी सुविधाएँ गाँव मे ही हो जाने

से गाँव की बुद्धि, श्रम और धन शहर में बहुत ही कम जायगा। ग्रामदानी गाँव मे व्यक्तिगत साहूकारी या व्यापार को मौका न मिलने के कारण सूद और नफा खतम हो गये। जमीन की मालकियत मिट जाने से ठीका भी बद हो गया। सरकार के बहुत से काम ग्रामसभा के हो जायँगे और वह भी अधिकतर काम श्रम-दान से ही करा लेगी, जिससे सरकार के भारी-भरकम कर कम हो जायँगे। फिर कई सार्वजनिक कामो का खर्च सामुदायिक खेती की पैदावार से चलेगा, जिससे ग्रामसभा के भी कर न बढेगे। इस तरह व्यापारी, सरकार, साहूकार, व्यसन, अज्ञान और रीति-रिवाज (*शिक्षा और स्वास्थ्य इनमे आ ही गया*)—इन छिद्रो से खाली होनेवाली मोट अब भरी रहेगी। इस तरह शोषण के सभी दरवाजे बद हो गये। उल्टे कृषि-सुधार और ग्रामोद्योग से मोट मे ज्यादा पानी डालने के कारण वह लबालब भर निकलेगी।

सामाजिक सुधार : अब हम सामाजिक सुधार की ओर मुडें। ग्राम-दान से गाँव के जातिभेद क्षीण होगे। स्त्रियो को पुरुषो के बराबर और सम्मान का पद प्राप्त होगा। गाँववाले व्यसन छोड देगे। शराब, जूआ, सट्टा आदि बद हो जायँगे। अनेक जगह कानून द्वारा मद्यनिषेध होने पर भी शराब धडल्ले से बनायी और बेची जाती है। किन्तु ग्रामराज्य मे सारी सत्ता गाँववालो के हाथ मे रहेगी। कौन आदमी कैसा है, यह गाँववालो को मालूम रहने से इस तरह की बातें बद करना सरल हो जायगा।

गाँव के लडके लडकियो की शादियाँ सामुदायिक पद्धति से

होगी। सभी ग्रामीण अपने गाव के लडके-लडकियो की शादियो मे आनन्द से भाग लेगे। ऐसी शादियाँ कम खर्च मे होगी और उसे सभी लोग बाँट लेगे। इससे लडके-लडकियो के माता-पिताओ पर अधिक भार न पडेगा। गाँव मे सात्त्विक मनोरजन की सुविधा रहेगी। गाँव का स्वयसेवक-दल या शान्ति-सेना ग्राम-राज्य की रक्षा करेगी।

पचवर्षीय योजना : ये और ऐसे ही अनेक काम करके ग्राम-राज्य को सुखी बनाने के लिए गाँव के सभी लोग मिलकर अपनी पचवर्षीय योजना बनायेंगे। हर गाँव की अलग-अलग योजना बनेगी। यह योजना पूरी करने की जिम्मेवारी पहले ही गाँववालो पर आयेगी। आज तो योजनाएँ दिल्ली मे बनती है। इसलिए गाँववालो मे उन्हे सफल बनाने का उत्साह नही दीखता। आज सभी की प्रवृत्ति काम टालने और जिम्मेवारी अपने ऊपर न लेने की है। सरकारी नौकरो और समाज-सेवको को इसका अनेक बार अनुभव आता है। गाँववाले मानते है कि सब कुछ सरकार या सेवक ही करे, हमारी जिम्मेवारी सिर्फ उपभोग करने की है। आज के स्वराज्य मे न तो मजदूरो की जिम्मेदारी है और न ठिकाने से मालिको की ही। हर आदमी दूसरे के सिर दोष मढने को तैयार है।

अब ग्रामराज्य हो जाने से अपने सुख-दु ख के जिम्मेवार ग्रामीण ही होंगे। इससे गाँव की लाचारी और निरुत्साह की भावना मिट जायगी। अनेक पीढियो के बाद पहले-पहल गाँव-वालो मे यह आत्म-विश्वास जाग उठेगा कि गाँव अपने पैरो पर

खडा हो सकता है। गाँववालो की शक्ति, बुद्धि और युक्ति को पूरा मौका मिलेगा। शोषण पर आधृत रचनाएँ खतम हो जाने से भी ग्रामराज्य सभी ओर से तेजी से प्रगति करेगे। अनेक गाँवो की पैदावार दो-तीन वर्षो मे ही दुगुनी हो जायगी। सामाजिक और नैतिक क्षेत्रो मे भी अनेक चमत्कार दीख पडेगे।

सर्वोदयी समाज का चित्र : लोग विनोबाजी से पूछते है कि ग्रामराज्य स्थापित कर आप जो सर्वोदय-समाज बनाना चाहते है, क्या उसमे लक्ष्मी बढेगी या कम होगी ? लोगो को लगता है कि विनोबा पैदल चलता है, कम कपडे इस्तेमाल करता और परिग्रह त्याग बैठा है। इसलिए सारे समाज को वह अपने-जैसा ही साधु-सन्यासी बनाना चाहता है। विनोबा कहते है "मै लोगो को समझाना चाहता हूँ कि हमे असग्रह के सिद्धान्त पर समाज खडा करना है। पर लोग 'असग्रह' का अर्थ समझे नही है।

आज हिन्दुस्तान मे सर्वोदय-समाज नही है। लोगो पर सग्रह बढाने का भूत सवार है। पर इतनी सग्रह-निष्ठा होकर भी ये कितना सग्रह कर पाये ? आज के सग्रही समाज मे कुटुम्ब के हर आदमी के पीछे औसतन ढाई छटाक दूध पडता है। लेकिन विनोबा के असग्रही समाज मे प्रतिव्यक्ति एक सेर दूध रहेगा। आज के सग्रही समाज म यह सन्देह ही है कि वर्षभर का अनाज सग्रहीत है या नही। पर मेरे असग्रही समाज मे पूरे दो साल का अन्न-सग्रह रहेगा। हरएक के घर मे खूब अन्न रहेगा। वह इतना रहेगा कि उसकी कीमत ही न रह जायगी। आखिर अन्न की कीमत ही क्या ? कोई भूखा होगा, तो लोग

उसे खिला देगे। पर कोई भी अन्न न बेचेगा। 'डालडा' खानेवाले को शुद्ध घी मिलेगा। कारण सर्वोदय-समाज मे घी प्रचुर रहेगा। शाक भी भरपूर रहेगी। किसी भी घर मे जाइये, आपको भोजन मिलेगा। ऐसे असग्रही समाज मे दूध ही क्या, शहद की भी महानदी बहेगी।

इसलिए पहली बात, असग्रही समाज मे विनोबा इतना बडा सग्रह करना चाहते है। लोगो को इसकी कल्पना ही नही। फिर भी वे यह सग्रह थोडे-से ही घरो मे बढाना नही चाहते। उसे प्रत्येक घर मे बाँट देना चाहते है।

दूसरी बात, सग्रह का समान वितरण होगा। सग्रह खूब रहेगा, पर वह घर मे नही, समाज मे रहेगा।

तीसरी बात, यह सग्रह निरुपयोगी वस्तुओ का न रहेगा। सिगरेट-बीडी का ढेर ग्रामराज्य के सग्रह मे न रहेगा।

चौथी बात, अच्छी चीजो के सग्रह मे भी क्रम देखना पडेगा। आज का क्रम कुछ भी अर्थ नही रखता।

नबर एक, उत्तम भोजन मिलना चाहिए।

नबर दो, पर्याप्त कपडा चाहिए।

नबर तीन, रहने के लिए अच्छे घर चाहिए।

नबर चार, साधन और औजार मिलने चाहिए।

नबर पाँच, ज्ञान के साधन, उत्तम पुस्तके सुलभ होनी चाहिए।

नबर छह, मनोरजन के स्वस्थ साधन सगीत आदि लोगो को सुलभ होने चाहिए। इसी क्रम के अनुसार वस्तुएँ बढानी चाहिए।

आज शहरो की स्थिति यह है कि खाने को नही मिलता, पर लोग कपडे अच्छे पहनते है। साराश, यह देखना होगा कि कौन-सी चीज पहले और कौन बाद मे अपेक्षित है। 'असग्रह' का अर्थ है, क्रमयुक्त सग्रह।

पाचवी बात, असगहो समाज मे पैसा कम-से-कम रहेगा। पिस्तौल तानकर केला ले जाना चोरी या लूट ही है। नोट देकर घी ले जाना भी ऐसी ही चोरी या लूट है। पैसा राक्षस के हाथ का शस्त्र है। पैसे से चोरी सुलभ हो जाती है। वह रात मे करने की जरूरत नही पडती। दिन दहाडे करते बनती है। आज पैसे के कारण यह भ्रम फैल गया है कि पास मे दूध, दही, शाक-भाजी और अनाज होने पर भी वह गरीब है और इनमे से कुछ भी न होते हुए भी सिर्फ पैसा होने से वह श्रीमान् है। इसलिए पैसा कम ही रहेगा।

इस तरह पाँच लक्षणो से युक्त असग्रही समाज ग्रामराज्य मे रहेगा।"

यह है, सर्वसाधारण ग्रामराज्य का चित्र! फिर भी आखिर यह तय करने का जन्मसिद्ध अधिकार गाँववालो को ही है कि गाँव कैसा रहे! इसलिए उन्हे हाँकने के लिए गडेरिये की जरूरत नही। जो गाँवो मे रहेंगे, वे ही अपने गाँव को योग्य आकार देंगे। बाहरी लोग उन्हे सलाहभर देगे। लेकिन गाँव कैसा हो, यह तय करने और उस तरह कर दिखाने की सारी जिम्मेदारी गाँववालो की ही रहेगी। स्वराज्य-प्राप्ति के बाद हम और भी परावलम्बी हो गये है। लोग समझते है कि अब

सब बातें सरकार ही करेगी। इससे बढ़कर भयानक और गलत विचार दूसरा नहीं हो सकता। स्वराज्य का अर्थ दूसरों की गुलामी मिटना मात्र नहीं। उसका अर्थ यही है कि हरएक को अपना राज्य है, यह मालूम पड़े। स्वराज्य तो हम बनानेवाले हैं। जिस तरह अपना खाना हमें ही खाना पड़ता है और तभी भूख मिटती है, उसी तरह अपना ग्रामराज्य भी हमें ही निर्माण करना होगा। तभी हमारा दुःख मिटेगा। भगवान् ने गीता में स्पष्ट कहा है : *'उद्धरेदात्मनात्मानम्'* अपना उद्धार करना खुद के हाथ में ही है।

• • •

फिर भी कुछ प्रश्न खडे हो जाते है। कुछ शंकाएँ मन मे उठती है। उन पर भी हम लोग विचार करे।

१. प्रश्न : गाँव के अधिकतर किसानो पर कर्ज है। यह कर्ज साहूकार ने खेती गिरो रखवाकर या उसीके भरोसे दिया है। वह कैसे ?

उत्तर : खेती सारे गाँव की बन जाने पर कर्ज भी सारे गाँव का हो गया। अब कर्जदार खुद साहूकार से कुछ न कहेगा। ग्रामसभा के प्रमुख लोग ही सभी साहूकारों से मिलेंगे। उनसे समझ लेंगे कि कर्ज मे मूलधन कितना है, कानूनन उचित सूद कितना और अनुचित कितना है। अनुचित सूद चुकाने का प्रश्न ही नही उठता। फिर यह देखा जायगा कि उचित सूद और मूलधन मिलाकर कितना चुकाया गया। अगर कुछ ही रकम बची हो, तो उसे सपत्तिदान मे दान देने के लिए साहूकार से प्रार्थना की जायगी। इस क्रान्ति की करुणा साहूकार के हृदय को भी क्यो न छुयेगी ? उसीने खेती, सूखा आदि कठिन प्रसंगो मे किसान की आवश्यकताएँ पूरी की। फिर वह गाँव का भला क्यो न चाहेगा ? उसका उपकार प्रेम से ही चुकाया जा सकेगा। क्या कभी पैसे से भी उपकार चुकाया जा सकता है ? साहूकार को इसका भान ही नही है।

अगर वह पूरा कर्ज संपत्ति-दान के रूप मे नही छोडता, तो शेष रकम गाँव की पैदावार से दस-पाँच वर्षो मे हफ्तेवार अदा की जायगी। गाँव की खेती या उद्योग के निमित्त मिले हुए संपत्ति-दान, साधन-दान या सरकारी मदद की रकम से यह कर्ज कभी न चुकाया जायगा। इस कर्ज की अदायगी गाँववालो की बढी हुई पैदावार से ही हर साल की जायगी। साहूकार विश्वास रखें कि कोई भी कर्ज डुबाया न जायगा। दस-पाँच वर्षो मे गाव पुराने कर्ज से मुक्त हो जायगा। जो काम गत सौ-दो सौ वर्षो मे किसी कानून या सरकारी सहकारी बैंको से सध न पाया, वह दस ही पाँच वर्षो मे सध जायगा। गाँव पर से चिन्ता का बहुत बडा बोझ ग्राम-दान से पहले ही हल्का हो जायगा। भारत मे सर्वत्र ग्राम-दान होने पर याने 'भारत-दान' होने पर तो साहूकार का ही हृदय बदल जायगा। इसलिए जैसे-जैसे ग्राम-दान बढता जायगा, वैसे-ही-वैसे यह प्रश्न सरल होता जायगा। अतएव ग्राम-दान बढने चाहिए।

२. *प्रश्न* . खेती और उद्योग के लिए नयी पूँजी की जरूरत पडेगी। वह कहाँ से मिलेगी ?

उत्तर : आज पूँजी या पैसा अधिक क्यो लगता है ? इसीलिए कि बहुत-से लोग खुद काम नही करते, मजदूरो से करवाते है। अब जब सभी लोग मेहनत करने लगेगे, तो पूँजी की जरूरत कुछ अशो मे कम हो ही जायगी। परस्पर श्रम-दान द्वारा मदद करने की वृत्ति बढ जाने से भी पहले जितना पैसा न लगेगा। इसी प्रकार पैसे के कारण हम लोग अनावश्यक चीजें खरीदते

है। यह वृत्ति भी कम हो जायगी। फिर भी कुछ पूँजी लगेगी ही। उसमे से कुछ रकम शहर के सपत्ति-दान और साधन-दान से मिलेगी। प्रत्येक कुटुम्ब कुछ बचत करेगा, गाँव को सम्पत्ति-दान देगा या कुछ अन्न भडार मे देगा। उससे भी कुछ पूँजी मिलेगी। फिर भी शुरू के दस-पाँच वर्ष कुछ पूँजी लगेगी ही। कम मामूली सूद पर सहकारी-समिति लेगी और सरकार की ओर से ग्राम-सहकारी-समिति लेगी और उसे गाँववालो को देगी। लेकिन कोई भी ग्रामीण व्यक्तिगत तौर पर केन्द्रीय सहकारी-समिति या सरकार से कर्ज न लेगा। अब से गाँव बाहरी सस्थाओ से सघटित रूप मे ही लेन-देन करेगा। सघटित रूप मे ही कर्ज लेना तय हो जाने पर विवाह जैसे अनुत्पादक काम के लिए कोई भी कर्ज न ले सकेगा। फलस्वरूप अनुचित कर्ज पर अपने-आप नियन्त्रण हो जायगा, जिससे गाँववालो को सरकार और केन्द्रीय सहकारी बैंक से शीघ्र ही कम सूद पर उचित मदद सुलभ हुआ करेगी। दस-पाँच साल बाद गाँव का सम्पत्ति-दान, अन्न-भडार, बचत और गाँव की पैदावार इतनी बढ जायगी कि दैनिक व्यवहार के लिए गाँवो को बाहरी पूँजी की जरूरत ही न लगेगी। इस बीच मामूली सूद का भार गाँव को सहना पडेगा। कर्ज उत्पादन के लिए ही मिलेगा।

३. प्रश्न : खुद की मालकियत की जमीन न होने पर लडके-लडकियो के विवाह कैसे होगे ?

उत्तर : सारे भारत मे ग्रामदान हो जाने पर तो यह प्रश्न ही न रहेगा। तब तक सर्वत्र यह वातावरण बन जाने से कि, ग्रामदान एक अच्छा काम है, गाँव के साथ सभी लोग सहानुभूति का

व्यवहार करेंगे। 'हमारी जमीन साहूकार के हाथ या जूए मे नही गयी, वह तो सारे गाँव की हो गयी। हम गाँव मे ही रहते है, इसलिए हमारे हिस्से भी जोतने के लिए जमीन आयेगी। हम भूमि-हीन नही, भू-सेवक बन गये है'—इसी ध्येयनिष्ठा के कारण अनेक शहरी भाइयो की गॉव से सहानुभूति रहेगी। किन्ही सयानी लडकियो को यह भी प्रेरणा होगी कि हमारी शादियाँ ऐसे ग्रामदानी पुरुषार्थी गाँवो मे हो। विवाह जैसे आनन्द के अवसर पर कर्ज निकालकर पीढी-दर-पीढी उसके बुरे परिणाम भुगतते रहना कोई बुद्धिमानी नही।

४. *प्रश्न :* किसी गाँव मे जमीन कम और लोग ज्यादा हो, तो वहाँ की समस्या कैसे हल होगी?

उत्तर : ग्रामराज्य मे जमीन की सिंचाई की पूरी सुविधा हो जाने के कारण कम जमीन मे भी आदमी का पोषण हो सकेगा। कुछ परती जमीन भी जोत मे आ जायगी। सुधरी हुई खेती से भी कम जमीन मे ज्यादा पैदावार होगी। इसलिए कम जमीन से भी अच्छी तरह गुजर हो जायगी। हम गाँव-गाँव ग्रामोद्योग भी शुरू करेंगे। फिर भी अगर यह प्रश्न हल नही होता और पडोस के गाँव मे जमीन ज्यादा और आदमी कम हो, तो उस गाँव की जमीन इस गाँव की हद मे लाने के लिए पडोसी को तैयार करेंगे। इसके लिए गाँव के नक्शे बदलने पडेगे। इसमे अड़चन ही क्या है? ग्रामराज्य समझदार रहेंगे और ऐसी अडचने सहज ही दूर हो जायेंगी। अथवा हम लोग ज्यादा जमीनवाले गाँव मे यहाँ के कुछ लोगो को ही भेज देंगे। वहाँ उन्हे जमीन मिल जायगी।

५. *प्रश्न :* ग्रामदान मे जमीन तो बाँटी जायगी। पर बैल-जोडी, हल आदि का प्रश्न हल कैसे हो ?

उत्तर : ग्राम-दान का अर्थ है, हरएक के पास जो कुछ हो, सारा गाव को समर्पित कर दिया जाय। फिर जो लोग मूल्यवान् जमीन दे देगे, तो क्या वे बैल-जोडी और औजारो को न देगे ?

६. *प्रश्न :* यह सब कानून द्वारा क्यो नही करते ? कानून से हुआ, तो हम लोग तैयार ही है।

उत्तर : कानून से यह काम कभी हो नही सकता। कानून से खेती बाँटी जा सके या सामूहिक खेती भी हो पाये, लेकिन वह 'ग्रामराज्य' नही, 'दिल्ली-राज्य' होगा। फिर, कानून से टूटे हुए दिल भी जुट कैसे पायेगे और इसके बिना ग्रामराज्य मे लोग मन लगाकर काम ही कैसे करेगे ? ग्राम-दान मे अपने-अपने कुटुम्ब-भर को देखना छोड सभी को ग्राम-कुटुम्ब की चिन्ता करनी होगी। मजदूर-मालिको और गरीब-श्रीमानो के बीच पडी खाई को पाटना होगा। यह बात कानून-सा कानून कर पायेगा ? आखिर मद्य-निषेध कानून बनने से कितना काम हुआ ? एक बार जब लोगो के दिल बदल जाते है, तब कानून उस पर मुहर का काम कर सकता है। कानून से मालगुजारी गयी, पर मालगुजारो और जनता के बीच प्रेम-सबध निर्माण नही हुए। कारण मालगुजारो के दिल नही बदल पाये। लेकिन अगर आज मालिक अपनी जमीन गाँव को अर्पण कर देता है और मजदूर अपना श्रम, तो गाँव मे नव-चैतन्य भर जायगा।

पूँजीवादी देशो मे सौ मे दो-चार ही लोग मालिक हुआ

करते है, शेष मजदूर। लेकिन भारत जैसे कृषिप्रधान देश मे सत्तर-अस्सी प्रतिशत छोटे-छोटे कृषक मालिक है, पाँच बडे कृषक और बीस मजदूर। अब सत्तर-अस्सी लोगो के हृदय बदलने के सिवा कानून उनकी जमीन कैसे ले सकेगा ? और उनके हृदय बदल जायँ, तो वे ग्रामदान मे ही जमीन दे देगे। फिर तो कानून की ज्यादा जरूरत ही न रहेगी। इसीलिए केरल के विधिमत्री ने स्पष्ट कहा है कि कानून से जमीन के प्रश्न हल नही हो सकते। लोगो का हृदय बदले बिना क्राति न होगी। कानून से हृदय-परिवर्तन या नवीन मूल्यो की स्थापना नही होती। कानून बनने से परस्पर कटुता बढना, कोर्ट-कचहरी आदि दोष तो उसमे है ही।

७. *प्रश्न :* जहाँ दो भाइयो मे आपस मे पटती न हो, वहाँ सभी गाँववालो की एकत्र खेती कैसे हो सकेगी ? वह कितने दिन तक टिक पायेगी ?

उत्तर : आखिर आज दो भाइयों की आपस मे क्यो नही पटती, इसका विचार करना होगा। आपस मे न पटने के अनेक कारण हैं, जिनमें एक मालकियत का हक भी है। अगर यह मालकियत ही मिटा दी जाय, तो झगडे की जड ही उखड जायगी। भाई-भाई मे हक और अधिकार की भावना रहती है। इसीलिए भाई ने थोडा भी कम-ज्यादा किया, तो उसका अपेक्षा-भग हो जाता है। परिणामस्वरूप भाई भाई से झगडने लगता है। लेकिन वही कोई मित्र कुछ थोडा-सा भी काम कर देता है, तो हम उसके कृतज्ञ बनते हैं। कारण मित्र मे कर्तव्य-भावना प्रबल होती है, हक की भावना नही। ग्राम-दान से हक की

भावना नष्ट होकर कर्तव्य की भावना आयेगी। उससे आज भाई-भाई में पटरी न बैठने पर भी कल मालकियत मिट जाने पर दोनों की पटने लगेगी।

८. *प्रश्न : हमारे बच्चों का शिक्षण कैसे होगा ?*

उत्तर : शिक्षण सभी को मिलना चाहिए और वह योग्य भी होना चाहिए, इस बारे मे कोई मतभेद नही। आज दिये जानेवाले शिक्षण से मनुष्य गुलाम बनता और नौकरी ढूँढता फिरता है। ग्रामदान के बाद हरएक गाँव में धीरे-धीरे आठवी कक्षा तक शिक्षण की व्यवस्था हो जायगी। जो अपने बच्चों को बाहरी शिक्षण देना चाहते हों, वे उन्हे बाहर भेज सकेंगे। गाँव के होनहार बच्चो को गाँव-समाज भी शिक्षण के लिए बाहर भेजेगा। अन्त मे तो सभी के शिक्षण की व्यवस्था गाँव मे ही होनेवाली है। आज जितना ज्यादा पढा-लिखा हो, उतना ही अधिक वेतन, यह स्थिति है। इसी कारण पैसे के लिए स्पर्धा चलती है। लेकिन कल ज्यादा पढने के कारण अधिक पैसा न मिलेगा। शिक्षण ज्ञान पाने का, समाज-सेवा का साधन माना जायगा। स्वभावत: जो बुद्धिमान् हो और जिसे ज्ञान की प्यास होगी, वही शिक्षण के लिए छटपटायेगा। फलत: आज जैसी स्पर्धा न चलेगी।

९. *प्रश्न : आज तो मनुष्य इसी भावना से ज्यादा मेहनत करता है कि खेती मेरी मालकियत की है। लेकिन ग्राम-दान से व्यक्तिगत मालकियत की भावना मिट जाने पर कौन ज्यादा काम करेगा ?*

उत्तर : मालकियत मिट जाने का अर्थ ही है कि गिरवी, ठीका, बिक्री आदि मार्गों से खेत दूसरे हाथ न चला जायगा। यह तो अच्छा ही हुआ। इससे हमारी खेती हमारे ही पास रहेगी। गुजारे के लिए मिली हुई खेती की पैदावार हमे ही मिलेगी। हर दस-पद्रह वर्षों से होनेवाले पुनर्वितरण मे भी साधारणत गुजारे के लिए मिली हुई खेती का हिस्सा हमारे ही पास रहेगा। जन-सख्या बढने के कारण कदाचित् थोडा कम-ज्यादा हो जाय। लेकिन पुनर्वितरण का साधारण ढग यही होगा कि जिसने जिस खेत पर मेहनत की हो और वह पुन मेहनत करने के लिए तैयार हो, तो वह खेत उसीके पास रहे। इसलिए गुजारे की खेती अपनी और पैदावार भी अपनी ही। पैदावार की बिक्री मे शोषण भी समाप्त हो जाता है। खेती कभी भी साहूकार के हाथ नही जाती। ऐसी उत्तम योजना से तो सभीको प्रेरणा बढेगी। प्रत्येक व्यक्ति खुद को मिली खेती पर खूब मेहनत कर अधिक-से-अधिक पैदावार करेगा।

१० प्रश्न : सामूहिक खेती के लिए प्रेरणा कैसे प्राप्त होगी ?

उत्तर : सामूहिक खेती होने पर पैदावार की योजना उत्तम बन सकती है। कौन-सी जमीन किस चीज की पैदावार के लायक है, यह देखकर ही बोवाई होगी। श्रम-विभाग के लाभ मिलेगे। इसलिए सामुदायिक खेती से अनेक लाभ हैं। फिर मानव एक सामाजिक प्राणी है। मिलकर काम करने और बाँटकर खाने मे अद्भुत आनन्द आता है। ये सारे लाभ सामुदायिक खेती के निमित्त प्रेरणा देने के लिए पर्याप्त हैं। गाँव-गाँव होनेवाली

छोटी-सी सामूहिक खेती का प्रयोग सफल हुआ करे, गाँव की खरीद-बिक्री जैसे सहकारी काम यशस्वी होने लगे, तो व्यक्तिगत खेती का क्षेत्र कम होकर सामुदायिक खेती का क्षेत्र बढ जायगा।

११. प्रश्न : ग्रामराज्य का अर्थ है, पुरानी ग्रामीण व्यवस्था को पुन. लौटाना। इससे प्रगति की घडी की सूई पीछे घुमाने जैसा ही होगा। ऐसे ग्रामराज्य से जीवनस्तर बेहद नीचे उतर आयेगा। सर्वोदय को आधुनिक विज्ञान और यत्र से घृणा होने के कारण सभी लोग फिर से दारिद्रय मे पचने लगेगे।

उत्तर : ये प्रश्न नही, आक्षेप है। आज की बीसवी सदी के ग्रामराज्य पुराने ग्रामराज्य जैसे न रहेगे। घडी की सूई आगे ही घुमेगी, कारण विज्ञान भी रहेगा और हिंसा भी मिट जायगी। विज्ञान का अहिंसा से व्याह कराये विना न तो आज की दुनिया टिक पायेगी और न सुखी ही होगी। सर्वोदय यत्र का विरोधी नही, पर उसका अन्धपुरस्कर्ता भी नही है। जो यत्र मानव के कल्याण के पोषक है—जैसे घडियाँ, रेले, साइकिले आदि—वे अवश्य रहेगे। लेकिन मानव-जाति का विनाश करने-वाले संहारक यत्र समाप्त हो जायेंगे। उत्पादक यत्रो मे कुछ रहेगे, तो कुछ छोड भी दिये जायेंगे। परती जमीन उपजाऊ वनाने के लिए ट्रैक्टर का उपयोग करेंगे। लेकिन उपजाऊ जमीन पर मजदूरन के लिए बहुत-से बैलो के रहते ट्रैक्टर का उपयोग कभी न किया जायगा। यह सब विवेक से तय करना होगा। सर्वोदय में विज्ञान और अहिंसा का मेल होने के कारण युद्धजन्य दारिद्रय और दुःखो से मानव बच जायेंगे।

१२. प्रश्न : ग्रामदान के बाद ग्राम-राज्य या निर्माण-कार्य की जिम्मेदारी किस पर होगी ? उतने ही ग्राम-दान प्राप्त किये जायँ, जितनों के नव-निर्माण का उत्तरदायित्व भूदान-कार्यकर्ता सँभाल पाये। अन्यथा केवल ग्राम-दान प्राप्त करने से क्या लाभ है ?

उत्तर : केवल ग्राम-दान से भी लाभ है। विषमता मिटेगी। पहले-पहल गाँव में 'समाज' बनेगा। सिर्फ समता से ही गरीबों की आय दुगुनी-तिगुनी हो जायगी। मजदूर मन लगाकर काम करने लगेंगे। इससे उत्पादन बढेगा। ग्राम-दान का अर्थ है, सुख-दुःख बाँट लेना! सिर्फ बाँट लेने से भी दुःख कम होता और सुख बढता है।

ग्राम-दान के बाद निर्माण की जिम्मेदारी तो सारे समाज पर है। विशेषतः सभी रचनात्मक काम करनेवाले लोगों एवं संस्थाओं, राजकीय दल और सरकार, इन सबका काम है। सर्वाधिक जिम्मेदारी गाँव की जनता पर है। जिस जनता ने ग्राम-दान दिया, उसे ही ग्रामराज्य की आगे की चढाई चढनी चाहिए। इसलिए यह कहना ठीक नहीं कि जितने गाँवों मे निर्माण-कार्य कर सके, उतने ही गाँव ग्राम-दान में प्राप्त किये जायँ। इसके विपरीत जितने ग्राम-दान बढेंगे, उतने ही परिमाण में हवा बदलेगी। उससे आगे का निर्माण-कार्य भी सरल हो जायगा। इसलिए ग्राम-दान पाने में रुकावट न आने दें। ग्राम-दान ही आगे के सारे निर्माण-कार्यों की नींव है।

१३. प्रश्न : ग्राम-दान का विचार तो अच्छा है। देश के बड़े-बड़े नेताओं, धर्म-गुरुओं और अर्थशास्त्रियों ने इसकी प्रशंसा

की है। लेकिन इतना बड़ा त्याग जनता कैसे कर पायेगी ? क्या भूदान-कार्यकर्ताओं को क्रम-क्रम से आगे बढ़ना जरूरी न था ?

उत्तर : जब-जब आगे कदम बढ़ाया जाता है, तभी पिछला कदम काफी माना जाता है। कहा जाता है कि व्यर्थ की जल्दबाजी करने से नुकसान होगा। जिस समय भूदान के लिए छठे हिस्से की माँग की गयी, उस समय वह भी भारी मालूम पड़ रही थी। अब ग्राम-दान का विचार सामने आने पर लोगों को छठे हिस्से की माँग हलकी मालूम पड़ने लगी है। सत्ताईस सौ गाँववालों ने ग्राम-दान देकर यह सिद्ध कर दिया है कि ग्राम-दान का विचार मानव-जाति के वश की बात है। वस्तुतः यह त्याग का कार्यक्रम न होकर प्रेम बढ़ाने का कार्यक्रम है। इसमें किसीको देने की अपेक्षा आपस में बाँट खाना है। एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बनकर ग्रामराज्य स्थापित करना है। गाँव का गोकुल बनाना है। गत पाँच वर्षों से सतत छठे हिस्से का प्रचार चालू रहा और लाखों लोगों ने उचित हिस्सा दिया भी। पिछले पाँच *वर्षों में स्पष्ट बता दिया गया कि यह हिस्सा समता का, स्वामित्व* के विसर्जन का पहला कदम है। अब पाँच वर्ष तक प्रचार और कुछ आचार करने के बाद भी अगला कदम न उठाया जाता, तो यह अनन्त काल तक प्रतीक्षा ही करना हो जाता !

१४. प्रश्न : मान लीजिये कि किसीकी ग्रामदानी गाँव में जमीन है और उसे उसने ग्रामदान में दे भी डाला। पर बाहर के दूसरे गाँव में भी उसकी जमीन है, जिसे उसने ग्रामदान में नहीं दिया। तो, क्या वे महाशय ग्रामदानी समाज के सदस्य बन सकते हैं ?

उत्तर : विनोबाजी कहते हैं कि अगर उसने ग्रामदानी गाँव की सारी जमीन दे दी हो और वहाँ रहता भी हो, तो वह ग्रामदानी ग्राम-सभा का सदस्य बन सकता है।

१५. प्रश्न : क्या वह एक ही समय में अनेक ग्रामदानी ग्राम-सभाओं का सदस्य रह सकता है ?

उत्तर : विनोबाजी कहते हैं कि रह सकता है। लेकिन वह जहाँ नहीं रहता, उस गाँव की ग्रामसभा का सदस्य बनने का वह आग्रह क्यों करता है ? कारण, इतनी जगहों की ग्राम-सभाओं की बैठकों में उपस्थित रहना उसके लिए संभव नहीं। इसलिए जिस गाँव में वह नहीं रहता, वहाँ का सदस्य बनने और वहाँ से कुछ आर्थिक लाभ उठाने का वह आग्रह न रखे।

१६. प्रश्न : ग्रामदानी गाँव का कोई आदमी बाहर नौकरी करके पैदा करता है, तो क्या वह उस संपत्ति को गाँव को दे डाले ?

उत्तर : विनोबाजी कहते है कि हरएक बात प्रेम और विवेक से करनी चाहिए। जमीन दान में दे दी, पर नौकरी करता हो, तो वह और कुछ माँगेगा ही नहीं। लेकिन अगर उसे पूरा न पड़ता हो, तो वह दूसरों से कम जमीन माँग सकता है। अथवा दूसरों के बराबर ही जमीन लेकर वह अपनी नौकरी का पैसा गाँव को संपत्ति-दान में दे सकता है।

१७. प्रश्न : जो ग्राम-दान में शामिल नहीं होता, क्या गाँव-वाले उसकी जमीन ठीके पर ले सकते हैं ? उसका उचित हिस्सा मिलने के लिए क्या उसे कानून का कुछ आधार मिल सकता है ?

उत्तर : ग्रामदान में जमीन न देनेवाला व्यक्ति खेती पर श्रम न

करनेवाला बड़ा किसान होगा। वह ग्रामदान से पूर्व अपनी सारी खेती मजदूरों से ही करवाता होगा। लेकिन ग्रामदान के मजदूर उससे व्यक्तिश बातचीत न करेगा, ग्राम-सभा ही उससे बातचीत करेगी। वह कहेगी कि आपका खेत हम बडे प्रेम से जोतेंगे और पैदावार आपके घर पहुँचा देंगे। इस तरह हम उसे प्रेम से जीतेंगे।

विनोबाजी कहते है कि "हमे 'गोपालकाला' करना है। प्रेम ही हमारा साधन है। कानून, करार और शर्तें हमारे पास नही। अन्दर आइये और प्रेम कीजिये। आपको प्रेम मिलेगा।"

१८. प्रश्न : यह सच है कि ग्रामदान से सबको समान आमदनी होगी। लेकिन क्या इससे लोगो मे कर्तृत्व की प्रेरणा कम न होगी ? लोग यह आशा रहने पर ही कि "अधिक पुरुषार्थ करेंगे, तो अधिक सपत्ति मिलेगी", ज्यादा परिश्रम करते है।

उत्तर : विनोबाजी कहते हैं क्या घर मे पिता इसलिए ज्यादा काम करता है कि उसे खुद को ज्यादा रोटियाँ मिलेंगी ? परिवार मे यह चल नही सकता कि जो जितना कमाये, उतना खाये। फिर भी काम करनेवाले को उत्साह रहता ही है ! आप कह सकते हैं कि यह बात परिवार मे तो चल सकती है, समाज मे यह उत्साह टिक नही पाता। लेकिन वह इसीलिए नही टिकता कि समाज मे ऐसी अधार्मिकता व्याप्त है। समाज मे कई बुरी बातें चलती हैं, पर क्या हम उन्हे ठीक कहेंगे ? अवश्य ही आज यह चलता है कि जो ज्यादा कमायेगा, उसे भोग का अधिकार भी ज्यादा होता है। पर यह गलत विचार है, अधर्म है। इसके कारण कर्म की प्रेरणा नही, लोभ की प्रेरणा ही बढ़ती है।

मै खूब पैसे कमाता और संग्रह करता हूँ, तो आलसी बन जाता हूँ। मेरी सन्तान भी आलसी और विलासी बनती है। कर्म-प्रेरणा क्षीण हो जाती है। इसके विपरीत समता अत्यन्त सुरक्षित चीज है। किसान टीले फोड़ और गड्ढे पाटकर सारी जमीन समान करता है, जिससे अच्छी फसल होती है। जो न्याय खेत के लिए, वही समाज के लिए भी लागू है। समता मे सर्वाधिक शक्ति है। तराजू बिलकुल समान होती है। दुनिया के सारे व्यवहार तराजू से चलते है। न्याय भी समता के आधार पर ही चलता है। फिर जीवन में समता आने से नुकसान का भय क्यों? अगर अधिक पैसे मिलने से मुझे ज्यादा काम करने की प्रेरणा मिलती है, तो दूसरे को मेरे पैसे लूट लेने की भी प्रेरणा मिलती है। फिर क्या वह भी उत्साह जरूरी है? सारांश, यह सारा दुष्टचक्र है। इसलिए ग्राम-दान से मत डरिये, किसी तरह का संकोच मत कीजिये। समता से आपकी शक्ति ही बढेगी।

फिर लोग सिर्फ पैसे के लिए ही तो काम नहीं करते! आज भी कितने ही लोग पुण्य के लिए, यश-प्रतिष्ठा के लिए, न्याय और सामाजिक सेवा के आनन्द के लिए काम करते ही है। क्रांति के बाद ये मूल्य समाज में अधिक-से-अधिक प्रतिष्ठित होगे। पैसे का मूल्य नष्ट हो जायगा। लोगों की कर्तृत्वशक्ति कम न होकर बढती ही जायगी।

• • •

सत्तावन की पुकार

ग्रामवासी बन्धुओ! हम लोग एक ही गाँव मे पैदा हुए और एक ही गाँव मे बढे। यही की धरतीमाता ने हमे पाला-पोसा। हम खुद की माँ पर भी अपनी मालकियत नही मानते। फिर यह धरती तो हजारो वर्षो से लाखो, करोडो की माता है। यह तो सर्वश्रेष्ठ माता है। इसके हम मालिक कैसे? यह हमारे जन्म से पहले भी थी और इसीकी गोद मे हम अन्तिम विश्राम पाते है!

जो बात जमीन की, वही सपत्ति की भी! सपत्ति का अर्थ ही है, सब लोगो द्वारा प्राप्त। सपत्ति बहुतो के सहयोग के बिना निर्मित ही नही हो सकती। फिर उसका कोई एक ही मालिक कैसे?

इसलिए व्यक्तिगत मालकियत की कल्पना सचाई से कोसो दूर है। मूलत यह कल्पना अपवित्र है। वह आज के अनेक पापो की जड है। इसलिए आओ, हम सब पाप का यह बोझ उतार-फेक मुक्त हो जायँ और ग्राम-धर्म की दीक्षा लें। सभी मिलकर गाँव को सुखी बनायें। इससे कलियुग सत्ययुग बन जायगा। जमीन पर स्वर्ग उतर आयेगा!

भूदान-समितियो के विसर्जन के कारण आज ग्रामदान सभीका काम हो गया है। अतएव सत्तावन मे यह काम पूरा करने के लिए सभीको आगे आना चाहिए। लेकिन हनुमानजी

की तरह आज जनता को भी अपनी शक्ति का भान नही है। जामवत की तरह यह भान करा देने का काम कार्यकर्ता कर रहे हैं।

गाँवों और शहरो मे ऐसे अनेक भाई और बहनें हैं, जो इस काम के लिए सर्वस्वत्याग तो नही कर पाते, पर सहानुभूति अवश्य रखते हैं। वे स्वयं को घर की चहारदीवारी मे कैद न कर ले और न बाल-बच्चो तक ही खुद को सीमित रखे। वे यह संकल्प करें कि गाँव ही मेरा घर है। मेरी गृहस्थी और गाँव की गृहस्थी अलग नही। इसलिए कभी भी अपने स्वार्थ को गाँव के हित के विरुद्ध न जाने दूँगा। मैंने जमीन पर से अपनी मालकियत छोड़ दी। वे यह तय करें कि सत्तावन में हम इस पाप से मुक्त होगे और फिर उसकी घोषणा भी कर दें। यह प्रतिज्ञा ले कि ग्राम-दान और ग्राम-राज्य का विचार ग्रामीणो में उठते-बैठते, चलते-फिरते फैलाता जाऊँगा।

गरीब लोग अपनी जमीन या श्रम देकर खुले तौर पर ग्राम-दान की माँग करें। जब बच्चा रोने लगता है, तभी उसकी भूख प्रकाश मे आती है और फिर माँ उसे शान्त करती है। ऐसे दाता लोग गाँव-गाँव सभाएँ कर ग्राम-दान की माँग करे। भू-माता की सेवा करने का हक सभीको मिलना चाहिए। गरीब व्यसन छोड़ दें। आलस झाड़ दे। यह समझकर कि आज नही तो कल सबको जमीन होकर रहेगी, पूरे उत्साह से काम करे। इससे उनकी प्रतिष्ठा बढेगी और उनकी मांग प्रभावकारी होगी।

गरीब लोग श्रीमानो पर प्रेम करे। जो (श्रीमान्) ग्राम-दान मे शामिल नही होते, उन पर तो और भी अधिक प्रेम करे। उन्हे प्रेम से समझाये कि अगर आप अलग रहना चाहते हो, तो खुशी से रहे। जब आप बुलायेगे, तभी आपके खेतो पर मन लगाकर काम करेगे। फिर जमीदार भी सोचेगे कि ग्रामदान से ये मजदूर दयालु और नेक बन गया, पैदावार भी अच्छी होने लगी, तो क्यो न मै भी ग्राम-दान मे शामिल हो जाऊँ? अगर हम इस तरह बर्ताव करे, तो निश्चय ही जमीदार वश मे आ जायेगे। मँगरौठ का शेष एक जमीदार अभी-अभी ग्राम-दान मे शामिल हुआ है। यह गाँवो के लिए ग्राम-दान का कार्यक्रम है।

श्रीमान् लोग भी सच्चे देवता को भोग चढाये। उधर वे देव-दर्शनार्थ हिमालय और समुद्र के किनारे तक जायँगे और इधर उनके गाँव मे ही सच्चा देव अपने भक्तो की बाट जोहता रहे, यह ठीक नही। वह भूखा मर रहा हो, सर्दी से ठिठुर रहा हो और प्यास से छटपटा रहा हो, पर उसकी परवाह ही न की जाय, यह कहाँ का धर्म है? आज इसी दरिद्रनारायण को भोग चढाने का समय आ गया है। पडोसी के दुःखी, रोगी, अज्ञानी और बेकार रहते कौन श्रीमान् सुखी रह सकता है? खाना-पीना, मौज उडाना और अपने बाल-बच्चो की देखना तो पशु भी करता है। हम मानव है। जो मनन और विचार करे, वही मानव है। इसलिए श्रीमान् लोग अपनी करुणा को जगाये। वे निश्चय करे कि जब तक मेरे गाँव के सभी लोग न खा लेंगे, तब तक मुझे खाना अच्छा न लगेगा। जब तक गाँव के सभी बालक शिक्षित न हो जायँ, तब तक मेरे बच्चे के पढने मे कोई सार नही। वे

सबको काम देने और गाँव को सुखी बनाने मे ही अपनी सारी शक्ति, बुद्धि और मुक्ति का विनियोग करे।

जब यह देश अंग्रेजो के चगुल मे रहा, तब यहाँ महात्मा गाधी, मोतीलाल नेहरू, बैरिस्टर चितरजन दास, देश-गौरव सुभाष, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, सरदार पटेल, पडित जवाहरलाल नेहरू, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, खान अब्दुल गफ्फार खाँ आदि एक-से-एक तेजस्वी नेता पैदा हुए और उन्होंने अपने घर-द्वार का होम कर दिया। उसीसे देश मुक्त हुआ।

आज हमे स्वतत्र हुए दस वर्ष हो गये। अब भी भारत मे करोडो ग्रामीण शोषण, दारिद्रय, अज्ञान, रोग-दोष आदि से गुलाम बने हुए है। वे अपमान, अन्याय और अत्याचार सहते जा रहे है। इस गुलामी से छुटकारा पाने के लिए हम आगे बढे। शोषण-विहीन और शासन-मुक्त समाज की स्थापना याने 'सर्वोदयी समाज' बनाना हमारा ध्येय है। महात्मा गाधी की तरह सन्त विनोबाजी इस काम के लिए राष्ट्र को पुकार रहे है। इन्हे अखिल भारतीय ख्यातिप्राप्त बाबू जयप्रकाश नारायण, गुजरात के रविशकर महाराज, उत्तर प्रदेश के बाबा राघवदास, दक्षिण के एस्० जगन्नाथन्, उत्कल के सैकडो ग्राम-दान प्राप्त करनेवाले विश्वनाथ पट्टनायक आदि सर्वस्व-त्यागी अनेक नरवीर प्राप्त है। तिरसठ के बूढे विनोबाजी गत छह वर्षो से प्रतिदिन पैदल घूम रहे है। उन्होने अब तक बीस हजार मीलो की पद-यात्रा की है।

उन्होंने पुकारा है कि भारतमाता मुक्त हो गयी, पर आज

भी हमारी धरतीमाता ग्रामीणों की तरह ही गुलाम है। इसलिए उसे सत्तावन में हम लोग मुक्त करें। गाँव-गाँव ग्रामदान करें !

गरीबो और श्रीमानो ! ग्रामीणो एवं नागरिको ! नवयुवक भाइयो तथा बहनो ! क्या यह पुकार आपको सुनाई नही देती ? भारतमाता की मुक्ति के लिए जैसे महात्मा गाधी की पुकार सुनते ही लाखों लोग दौड़ पड़े, वैसे ही हम लोग भी इस ऐतिहासिक सत्तावन के साल में धरतीमाता की मुक्ति के लिए सन्त विनोवा की पुकार पर क्या लाखो की सख्या मे दौड़ न पड़ेगे ? जिले-जिले से अनेक कार्यकर्ता घर-द्वार छोड़कर यह कार्य इसी साल पूरा करने के लिए निकल पड़े है। किसीने पटवारगिरी छोड़ी, किसीने मास्टरी से इस्तीफा दिया, किसीने वकालत से विश्राम लिया, बहनो ने घरों और बाल-बच्चों को त्यागा, अविवाहितों ने अपने विवाह स्थगित कर दिये, बूढे लोग अपने एकलौते बच्चे का ब्याह छोड़ तानाजी की तरह आगे आये ! ऐसे अनेक भक्तों की पुण्य-गाथाएँ सन् सत्तावन में तैयार हो रही है।

इसलिए हम सब उठें और धरतीमाता को मालकियत की बेडियों से छुड़ायें। इसीसे ग्रामराज्य निर्माण होगा। यही सन् सत्तावन का सन्देश है। परमधर्म उपस्थित होने पर स्वधर्म भी त्यागना पड़ता है। भगवान् ने गीता में कहा भी है: *'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'*—सभी धर्म छोड़ एकमात्र मेरी शरण आओ। बयालीस की तरह ही सत्तावन की यह माँग उपस्थित है। पंद्रह साल हमने खूब विश्राम कर लिया। अब

समय बहुत थोडा रह गया है। हम यह काम इसी वर्ष पूरा कर डाले।

ग्राम-दान दुनिया से युद्ध और लोभ की हवा शुद्ध करने-वाला आत्म-बम है। उधर अणु-बम के विस्फोट हो रहे हैं। इधर अपने-अपने गाँवो मे ग्राम-दान कर इसी साल हम भी आत्म-बम का विस्फोट करें और विश्वशान्ति को निकट लाये। सत्तावन के साल मे अपने-अपने घरो मे बैठकर पुराने कामो मे रमे रहना पाप है। अट्ठावन मे ये सब काम हम ग्राम-दान की नीव पर भलीभाँति कर सकेंगे। लेकिन एक बार सत्तावन का साल हाथ से निकल जायगा, तो फिर वह वापस न लौटेगा। सत्तावन हिन्दुस्तान के भाग्योदय का वर्ष है। यही ग्राम-दान का सन्देश है। ग्राम-राज्य के लिए सत्तावन मे सभी गाँवो मे ग्राम-दान! धरतीमाता की मालकियत के हक की बेडियो से मुक्ति! यही सत्तावन की पुकार है!

• • •

ग्रा म दा न-प त्र

गाँव का नाम ——— : मौजा नं० ——— : तहसील ——— : जिला ——— : प्रदेश ——— :

पू० विनोबाजी के कथनानुसार सारी जमीन बुद्धि और श्रम भगवान् के—गाँव के है, यह बात मुझे जँच गयी और उसके अनुसार मेरे पास की निम्नलिखित तपसील की जमीन का हक मैं सारे ग्राम-समाज को अपने इस लेख द्वारा अर्पण कर रहा हूँ। इसी तरह अपनी सारी बुद्धि और श्रम-शक्ति भी ग्राम-समाज को अर्पण कर रहा हूँ। ग्राम-समाज जितनी और जो जमीन जोतने और गुजारे के लिए देगा, उसे मैं खुशी से और अपनी सारी शक्ति लगाकर जोतूंगा और गाँव की पैदावार बढ़ाऊँगा। मेरे इस विश्वास के लिए भगवान् साक्षी हैं।

तारीख : गाँव का कुल क्षेत्र : कुटुम्ब-संख्या : जन-संख्या :

नाम (पूरा)	स० नं०	क्षेत्र	आकार	हक का प्रकार	हस्ताक्षर

क्यों नही आता ?' वे आपसे मक्खन माँगने आयेगे। आप कहेगे : 'मक्खन बनता है, पर बच्चे खा डालते है।' वे कहेगे : 'हम आपको ज्यादा पैसे देगे।' आप उत्तर देगे : 'आपके पत्थर और कागज आपको ही मुबारक रहे। हमे उनसे क्या लाभ !' वे घबराकर पूछेगे : 'फिर मक्खन मिलने का और कोई रास्ता है ?' आप कहेगे : 'है, लेकिन आप अपने नाम से हमारे यहाँ एक गाय रखिये और उसकी सेवा मे मदद दीजिये।' वे पूछेगे : 'क्या गाय रखनी ही पडेगी ?' आप कहेगे 'हाँ, रखनी ही पड़ेगी। इतना ही नही, उसकी सेवा के लिए रोज एक घटा यहाँ आना भी पडेगा।' वह कहेगा 'गाय तो रखता हूँ, पर उसकी सेवा मुझसे न बन पडेगी। मै बूढा हो गया हूँ !' आप कहेगे 'आप बूढे है, तो अपने बच्चे को भेजिये।' वह कहेगा : 'मेरा लड़का तो कॉलेज जाता है। वह किसीका भी काम नही करता। फिर गाय की सेवा कैसे करेगा ?' आप कहेगे : 'वह कोई भी काम नही करता, तो मक्खन भी खाता न होगा।' शहरी आदमी कहेगा. 'नही, मक्खन तो वह रोज खाता है।' आप कहेगे : 'आप आये या अपने बच्चे को दीजिये। किसीको तो आना ही पडेगा।' वह कहेगा. 'मै ही आऊँगा, पर गाय का दूध मुझे दुहने नही आता।' आप हँसकर जवाब देगे : 'ठीक, शहरी लोग अनाडी होते है। उन्हे दूध कहाँ से दुहने आये ? लेकिन गोबर वगैरह तो उठा सकेगे।'

फिर शहरवाला आपके यहाँ आयेगा। आप उससे सेवा करवायेंगे और उसे मक्खन देते जायँगे।

ग्रामवासी-नगरवासी-संवाद

[विनोबा]

गाँव मे कोई बालक अपनी माँ से मक्खन माँगता है, तो वह उसे नही मिलता। कहते है, 'यह बेचने के लिए है।'—यह सारी चर्चा भागवत मे कृष्ण-यशोदा-सवाद मे आती है। कृष्ण कहता है 'मक्खन बाँट डालो!' यशोदा कहती है 'नही, हम उसे बेचेगे।' कृष्ण उत्तर देता है 'जिस मथुरा शहर मे मक्खन बेचा जाता है, वहाँ पैसा तो है, पर उसके साथ ही कस भी है। इसलिए अगर कस के पजे से छुटकारा पाना चाहो, तो मक्खन बाँटकर खा जाना चाहिए।' कृष्ण ने मक्खन बाँटकर खा डाला। मैं आपसे पूछता हूँ 'आप दूध, मक्खन और फल बेचते क्यो है? खाते क्यो नही? चाहे तो खाने के बाद बचने पर बेच दे। क्या आपको ये चीजे नही भाती?'

जीवन के लिए आवश्यक हर चीज ग्रामीणो के पास मौजूद है। श्रीमानो के पास तो सिर्फ कुछ पीले-सफेद पत्थर (सोना-चांदी) और कुछ हरे-नीले कागज (नोट) है। इनके सिवा उनके पास धरा ही क्या है? जिनके पास कुछ नही, वे श्रीमान् माने गये और जिनके पास सब कुछ है, वे गरीब—इसीको 'माया' कहते हैं। आपको खुद ही अपनी चीजे तैयार कर उनका उपभोग करना चाहिए। अगर आप ऐसा करें, तो शहर के लोग खुद आपके पास दौडते आयेंगे।

फिर शहरवाले कहेगे : 'आखिर आजकल बाजार मे मक्खन